सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

अक्तूबर, 2017 वर्ष 16 अंक 08

शहीदों को मुर्दा कहो तुम नहीं

शहीदों को मुर्दा कहो तुम नहीं
वो ज़िन्दा हैं इसमें कोई शक नहीं
हयात उनकी तो बरज़ख़ी है जनाब
कहो मत हैं मुर्दा, है रब का ख़िताब
हुई उनको हासिल है रब की रिज़ा
वह पाते हैं मख़सूस रब से ग़िज़ा
शहीदों के सरदार हमज़ा हुए
है क़ौले नबी ये हर इक जान ले
मुझे भी शहादत हो या रब नसीब
शहीदों की सोहबत हो या रब नसीब
हूं पढ़ता नबी पर दुरूदो सलाम
शहीदों को भी पहुंचे मेरा सलाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
नया साल मुबारक हो	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	08
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	11
पवित्र कुर्आन की मौलिक शिक्षाएं	हज़रत मौलाना सय्यिद राबे हसनी नदवी	14
अपने बच्चों की फिक्र कीजिए	इदारा	20
नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत	मौलाना मंजूर नोमानी रह0	21
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	27
शैक्षिक व्यवस्था तथा जीवन	हज़रत मौलाना सय्यिद राबे हसनी नदवी	31
सर्जनों की शीघ्रता की कहानी	अब्दुल मन्नान	33
इस्लाम का मेयारे फ़जीलत	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	35
समय का विनाश, व्यक्तिगत तथा	जावेद अख़तर नदवी	39
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-निसाः

अनुवाद-

और जो लोग अल्लाह और पैगम्बर की आज्ञा का पालन करेंगे तो वे उन लोगों के साथ होंगे जिनको अल्लाह ने इनआम दिया यानी पैग़म्बर, सिद्दीक़, शहीद और नेक लोग और क्या ही खूब साथी हैं[1](69) यह फ़ज़्ल अल्लाह ही की ओर से है और अल्लाह का ज्ञान काफ़ी है(70) ऐ ईमान वालो! अपने लिए चौकसी के सारे साधन कर लो फिर टुकड़ियां बना कर निकलो या एक साथ ही निकल पड़ो[2](71) और निश्चित ही तुम में कोई ऐसा भी है जो देर लगा ही देता है फिर तुम पर कोई मुसीबत आती है तो कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर कृपा की जो मैं उनके साथ मौजूद न था(72) और अगर तुम्हें अल्लाह का फ़ज़्ल हासिल होता है तो वह इस तरह कहने लगेगा मानों उसमें और तुम में कोई संबंध ही न था कि ऐ काश मैं भी उनके साथ होता तो बड़ी सफलता पाता[3](73) तो जो लोग भी आखिरत के लिए दुनिया के जीवन का सौदा करते हैं उन्हें चाहिए कि वे अल्लाह के रास्ते में लड़ें और जो भी अल्लाह के रास्ते में लड़ेगा फिर वह मारा जाए या विजय प्राप्त करे तो हम उसे आगे बड़ा बदला प्रदान करेंगे(74) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में उन बेबस मर्दों, औरतों और बच्चों की ख़ातिर जंग नहीं करते जो कहते हैं ऐ हमारे पालनहार! हम को इस बस्ती से निकाल ले जिसके वासी अत्याचारी हैं और हमारे लिए अपने पास से कोई समर्थक खड़ा कर दे और हमारे लिए अपने पास से कोई मददगार बना दे[4](75) जो ईमान वाले हैं अल्लाह के रास्ते में लड़ते हैं और जो काफ़िर हैं वे तागूत (शैतान) के रास्ते में लड़ते हैं बस शैतान के समर्थकों से लड़ो, बेशक शैतान की चाल ही कमज़ोर है[5](76) क्या आपने उनको नहीं देखा जिनसे कहा गया कि हाथों को रोके रखो, नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करते रहो फिर जब उन पर क़िताल (लड़ाई) ज़रूरी किया गया तो उनमें एक गिरोह को लोगों का ऐसा डर महसूस होने लगा जैसे अल्लाह का डर हो या उस से भी बढ़ कर, और उन्होंने कहा कि ऐ हमारे पालनहार! हम पर आपने क़िताल क्यों ज़रूरी किया काश कि आप थोड़ी मोहलत हम को और दे देते, आप कह दीजिए दुनिया का ऐश थोड़ा ही है और जिसने अल्लाह का डर अपनाया उसके लिए आख़िरत ही बेहतर है

और बाल बराबर भी तुम्हारे साथ अन्याय न होगा[6](77) तुम जहां भी हो मौत तुम को आ कर रहेगी चाहे तुम मज़बूत किलों ही में क्यों न हो और अगर उनको कुछ भलाई पहुंचती है तो कहते हैं यह अल्लाह की ओर से है और अगर उनको कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो कहते हैं यह तुम्हारी ओर से है, आप कह दीजिए सब अल्लाह ही की ओर से है तो इन लोगों को क्या हो गया, यह कोई बात समझने के लिए तैयार ही नहीं(78) तुम को जो भलाई मिली है वह अल्लाह की ओर से है और जो तकलीफ़ तुम को पहुंचती है वह तुम्हारे नफ़्स की ओर से है और हमने आपको लोगों के लिए पैग़म्बर बना कर भेजा है और अल्लाह गवाह के लिए काफ़ी है[7](79) और जिसने पैग़म्बर का आज्ञा पालन किया तो उसने अल्लाह का आज्ञापालन किया और जो फिर गया तो हमने आपको उन पर दारोग़ा बना कर नहीं भेजा(80)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. पैग़म्बर वह जिस पर वह्य आए, सिद्दीक़ वह जो पैग़म्बर की भरपूर पुष्टि करे, शहीद वह जिसका ईमान इतना शक्तिशाली हो कि उस के लिए जान दे दे, और नेक वह जिस की प्रकृति नेकी पर चले और जो इसके लिए प्रयास करता रहे वह भी उनमें शामिल है।

2. जिहाद का उल्लेख है।

3. यह मुनाफ़िकों का उल्लेख है कि अगर मुसलमान को नुक़सान पहुंचता है तो खुश होते हैं कि हम आराम से रहे कि गए ही नहीं, और माल-ए-ग़नीमत (युद्ध के बाद शत्रु धन) प्राप्त होता है तो पछताते हैं कि अगरे हम जाते तो हमें भी हिस्सा मिलता, मानों केवल दुनिया ही उनका जीवन-लक्ष्य है, न उनको इस्लाम में रुचि है और न मुसलमानों से कोई सम्बन्ध है, इसीलिए आगे ईमान वालों को आदेश है कि अपनी नियतें दुरुस्त कर लें।

4. एक तो अल्लाह के रास्ते में जंग करो, दूसरे उन लोगों के लिए जंग ज़रूरी है जो मक्के के काफ़िरों के क़ैदी हैं और सताए जा रहे हैं उनको छोड़ाना मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है।

5. जब ईमान वाले अल्लाह के लिए लड़ते हैं तो उनके लिए ज़रूरी है कि वे शैतान के दोस्तों से मुक़ाबला करें और उनको डरने की ज़रूरत नहीं अल्लाह की मदद उनके साथ है और शैतान की चाल और धोका कमज़ोर ही है।

6. मक्के में हिजरत से पहले काफ़िर मुसलमानों पर बड़ा अत्याचार करते थे, मुसलमान आ कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुक़ाबला की इजाज़त मांगते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते कि मुझको अभी इजाज़त नहीं, अभी हाथ रोके रखो, नमाज़ पढ़ते रहो, ख़ैर-ख़ैरात करते रहो, फिर जब मदीना हिजरत हुई तो मुक़ाबले की इजाज़त मिली फिर इसका आदेश हुआ तो कुछ कमज़ोर मुसलमानों को डर महसूस हुआ और उन्होंने चाहा कि यह आदेश और देर से आता तो बेहतर होता इसी का उल्लेख है

शेष पृष्ठ....19 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

हकदार का हक देने में टालमटोल की मुमानियतः-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया मालदार को अदाये कर्ज व अमानत में देर करना, टाल मटोल करना जुल्म है। अगर कोई मोहताज कर्जदार किसी मालदार से अपने कर्ज अदा कर देने की गुजारिश करे तो उस मालदार पर लाज़िम है कि वह मान ले! (बुखारी—मुस्लिम)

हद्या व तोहफा और सद्का दे कर वापस लेने की हुरमतः-

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स अपनी दी हुई चीज वापस लेता है तो उसकी मिसाल उस कुत्ते की सी है जो क़ै (उल्टी) कर के फिर चाट लेता है।

(बुखारी—मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि जिसने हिबा कर के वापस ले लिया उस ने गोया कै खा ली।

हज़रत उमर बिन खत्ताब से रिवायत है कि मैं ने एक शख़्स को अल्लाह की राह में सवारी के लिए एक घोड़ा दिया, उसने उस की खिदमत में कोताही कर के उस को खराब कर दिया, मैंने इरादा किया कि उसको खरीद लूं क्योंकि अब वह सस्ता मिलेगा, जब मैं ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया तो आपने फरमाया नहीं, सद्का दे कर वापस न लो, अगर चे एक ही दिरहम का मिले, सद्के का वापस लेना उस कुत्ते की तरह है जो अपनी क़ै आप खा जाता है। (बुखारी—मुस्लिम)

यतीम का माल खाने की हुरमतः-

अनुवादः जो लोग जुल्म से यतीमों का माल खाते हैं वह अपने पेट में आग भरते हैं वह अन करीब दोजख में जायेंगे।

दूसरी जगह अल्लाह ने इरशाद फरमायाः—

यतीमों के माल के पास भी न जाओ मगर ऐसे तरीके से जो बेहतर हो!

एक जगह और इरशाद फरमायाः—

जो लोग जुल्म से यतीमों का माल खाते हैं वह पूछते हैं। कह दो कि उनके लिए खैर ख्वाही बेहतर है, अगर तुम उनसे मिल जुल कर रहो तो तुम्हारे भाई हैं अल्लाह तआला मुफ्सिद को भी जानता है और मुस्लिह को भी। हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः सात चीजें हलाक़ करने वाली हैं उनसे बचो। लोगों ने अर्ज किया वह क्या हैं! फरमायाः

(1) अल्लाह का शरीक ठहराना

(2) जादू करना

शेष पृष्ठ....13 पर

नया साल मुबारक हो

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

प्रिय पाठको! नया साल मुबारक हो, मुहर्रमुल हराम इस्लामी केलेण्डर का पहला महीना है जो इसी अक्तूबर महीने में आरम्भ हो रहा है, आम तौर से इस को मुहर्रम का महीना कहा जाता है लेकिन इस को अरबी में मुहर्रमुल हराम कहते हैं हराम अरबी शब्द है यह दो अर्थ रखता है एक तो हराम अर्थात वर्जित, जैसे कहते हैं शराब पीना ह़राम है, ब्याज खाना ह़राम है, दहशत गर्दी नाजाइज़ और ह़राम है आदि। दूसरे हराम, सम्मानित के अर्थ में बोला जाता है, जैसे मस्जिदे हराम, मुहर्रमुल हराम आदि, मुहर्रमुल हराम अर्थात मुहर्रम का सम्मानित महीना, इस्लाम में चार महीने सम्मानित माने जाते हैं जिनकी ओर पवित्र कुर्आन में भी संकेत है, अनुवादः निः संदेह अल्लाह के निकट महीनों की गिनती बारह है, आसमानों और ज़मीन की पैदाइश के दिन से लौहे महफ़ूज़ में अंकित है उनमें से चार महीने प्रतिष्ठा वाले हैं''। (अत्तौबा—36)

मुहर्रम, रजब, ज़ीकअ़दा, जिलहिज्जा। इस्लाम आने से पहले भी अरब इन महीनों को सम्मानित मानते थे और इन महीनों में युद्ध बंद कर देते थे, इस्लाम ने भी इन महीनों को सम्मानित माना और इस के सम्मान का आदेश बाकी रखा।

मुहर्रम की दस्वीं तारीख़ को आशूरा का दिन कहते हैं, इस्लाम में आशूरा के दिन का बड़ा महत्व है इस दिन बड़ी—बड़ी घटनाएं घटी हैं, और सबसे प्रसिद्ध घटना जिस का उल्लेख हदीसों में है वह यह कि आशूरा ही के दिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए समुद्र में रास्ता बना दिया गया था जिस से निकल कर मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम बनी इस्राईल को लेकर समुद्र को पार किया था और उन का पीछा करने वाला फिरऔन अपनी सेना के साथ उसी समुद्र में डुबो दिया गया था। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्के से हिजरत कर के मदीना तय्यिबा तशरीफ ले गये और वहां रहने लगे तो आपसे बताया गया कि यहां के यहूदी आशूरा के रोज रोज़ा रखते हैं, आप ने यहूदियों से मालूम कराया कि तुम लोग आशूरा का रोज़ा क्यों रखते हो तो उन्होंने बयान किया और हज़रत मूसा का वाकिया बताया और कहा कि उसके शुक्रिये में हम लोग आशूरा के रोज़ रोज़ा रखते हैं। अल्लाह के नबी सल्लल्लालु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा से फरमाया कि हम लोग यहूदियों से ज़ियादा इस का हक़ रखते हैं कि आशूरा के दिन रोज़ा रखें इस तरह अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद आशूरा का रोज़ा रखने लगे और अपने सहाबा को भी आशूरा के दिन रोज़ा

रखने का आदेश दिया। तमाम सहाबा ने इसका पालन किया वह खुद रोज़ा रखते और अपने बच्चों से भी आशूरा का रोज़ा रखवाते, यह सिलसिला बराबर चलता रहा।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्र के आखिरी वक्त में एक रोज सहाबा से फ़रमाया की अगर मैं जिन्दा रहा तो अगले आशूरा के रोज़े के साथ एक दिन और रोज़ा रखूंगा ताकि हमारे और यहूदियों के रोज़े में फ़र्क़ हो जाए, लेकिन अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अगला आशूरा न मिला, आपके इस कौल की बिना पर सहाबा ने आगले मुहर्रम के आशूरा के साथ 10 या 11 को भी रोज़ा रखा और अब तक यह सिलसिला जारी है मालूम हुआ कि यहूदियों की मुशाबहत के सबब सिर्फ 10 मुहर्रम का रोज़ा पसन्दीदा नही है। लेकिन सच यह है कि अब 1400 वर्षों पश्चात आज के यहूदी मुहर्रम जानें न आशूरा का दिन, इसलिए अब सिर्फ़ 10 मुहर्रम को रोज़ा रखना मकरूह नहीं होगा। लिहाजा अगर कोई दो दिनों का रोज़ा न रखे तो 10 मुहर्रम का रोज़ा न छोड़ें कि इस रोज़े का बड़ा सवाब है और चाहिए कि एक दिन मिला कर ज़ियादा सवाब कमायें।

निःसंदेह आशूरा का दिन बड़ा ही मुबारक (शुभ) बरकत वाला और फजीलत वाला है परन्तु बड़े खेद के साथ यह भी स्वीकार करना पड़ता है कि इसी दिन में एक बड़ी दुखद घटना भी घटी है और वह घटना हज़रत हुसैन रजियल्लाहु अन्हु की अपने घर के 17 नव युवकों समेत 72 लोगों की शहादत की घटना है यह घटना करबला के मैदान में खेमें में औरतों और बच्चों की मौजूदगी में घटी इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

यह दुखद घटना कूफ़ा वालों के ग़लत निर्णय और उनके बचन भंग और विश्वास घात तथा यजीद की ओर से कूफा के गवर्नर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद की कठोर नीति, उसकी क्रूरता तथा अत्याचार के परिणाम स्वरूप घटी।

निः संदेह हज़रत हुसैन रजियल्लाहु अन्हू हज़रत फातिमा के बेटे, हज़रत अली के लाडले, अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चहीते नवासे, सहाबीये रसूल जन्नत की शुभ सूचना पाए हुए उम्मत के अतिप्रिय व्यक्ति हैं बेशक यह अपने साथ शहीद होने वालों के साथ और दूसरे शहीदों के साथ जन्नत के बागों में हैं, और क़ियामत के बाद सदैव जन्नत में सुख चैन के साथ रहेंगे। जब कि दूसरी ओर जिन अत्याचारियों ने हज़रत हुसैन रज़ि0 को शहीद किया या शहीद किये जाने का आदेश दिया या उन को शहीद करने में किसी प्रकार का सहयोग दिया आशा यही है कि वह सब अपनी बरज़ख़ी क़ब्रों में दण्ड भुगत रहे होंगे और क़ियामत के पश्चात जहन्नम की आग उनका स्वागत करेगी।

इसमें शक नहीं कि इस्लामिक इतिहास में इस से पहले भी बड़ी दुखद घटनाएं घटी हैं जैसे हज़रत सुमय्या रज़ि0 की शहादत, जिन को क्रूर अबूजेहल ने बरछा मार कर शहीद कर दिया था, उनकी ओर से कोई बोलने वाला तक न था बिअ़रे मऊना की घटना भी बड़ी दुखद घटना है जिसमें एक क़बीले के लोग 70 सहाबा को अपने यहां दीन प्रसारण के लिए ले गये और विश्वास घात करके उनके ऊपर टूट पड़े और 69 को शहीद कर दिया सिर्फ एक सहाबी बचे जिन्होंने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घटना की सूचना दी, अल्लाह के नबी बहुत दुखी हुए और पूरे एक महीने तक एक खास दुआ नमाज़ में पढ़ी जिस को कुनूते नाज़िला कहते हैं। यह दुआ हदीस की दुआओं में मौजूद है और हम मुसलमानों को चाहिए कि जब मुआशरे या मुल्क में ज़ुल्म व ज़ियादती के वाकिआत हों तो इस दुआ को एहतिमाम से पढ़ें। मैं ने तो बाज उलमा को ऐसे हालात में यह दुआ फ़ज्र की फ़र्जों की दूसरी रकअ़त में क़ौमा में पढ़ते सुना और उस में शरीक हुआ हूं। और भी बड़ी दुखद घटनाएं अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने घटीं, उन से हम को यह शिक्षा मिलती है कि ऐसी घटनाओं के पश्चात मुसलमानों को क्या करना चाहिए।

अल्लाह के नबी सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम के पश्चात ख़ुलफाए राशिदीन के काल में हजरत उमर की शहादत हुई जख़्मी होने के पश्चात आप की शहादत भी पहली मुहर्रम को हुई फिर बड़ी दुखद शहादत हज़रत उस्मान गनी रज़ि0 की हुई बागियों ने आप का घर घेर लिया लगभग 28 दिनों तक आपके लिए खाना पानी पहुंचना बंद कर दिया इस हादिसे में सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि हज़रत उस्मान ने ताकत रखते हुए न बागियों के खिलाफ़ तलवार उठाई न अपने साथियों को इसकी अनुमति दी उन का कहना था कि हम कलमा पढ़ने वालों पर तलवार नहीं उठा सकते यहां तक कि उनको उनकी पत्नी नाइला के सामने क़त्ल कर दिया गया। हज़रत नाइला ने बचाव की कोशिश भी की तो उनकी उंगली तलवार से कट गई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राज़िऊन, इसी प्रकार हज़रत अली रज़ि0 को शहीद किया गया। तात्पर्य यह कि अल्लाह वालों की परीक्षा सदैव होती रही है और होती रहेगी। देखना यह है कि इन परीक्षाओं में अल्लाह वालों की शहादत के बाद हम को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए इस सिलसिले में शीआ़ हज़रात जो कुछ करते हैं उससे हमको कोई ग़रज़ नहीं लेकिन हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत की याद में हमारे कुछ सुन्नी भाइयों ने बाज़ ग़लत बातें अपना रखी हैं, जैसे ढोल ताशे बजाना अलम के जुलूस निकालना अलमों पर लोहे या तांबे के बने हुए सर और पंजे लगा कर

शेष पृष्ठ....19 पर

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

—हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) — अनुवादः मुहम्मद हसन अंसारी

तौहीद (एकेश्वरवाद) एक मानवीय आवश्यकता:–

मनुष्य पूर्ण रूप से मोहताज और मोहताजी की प्रतिमूर्ति है और सर्वथा आकांक्षाओं का पुतला है। उसकी आवश्यकताएं अथाह मानो असीम, उसकी शारीरिक आध्यात्मिक अपेक्षाएं असीमित और उसकी प्रकृतिक में लोभ व संतोष है। इसलिए वह किसी ऐसी हस्ती के सहारे नहीं जी सकता जिसकी शक्ति व अधिकार, जिसका दान व अन्नदान (रज़्ज़ाकी) जिसकी सूचना व ज्ञान चाहे कितना ही विशाल हो, परन्तु सीमित हो।

मनुष्य अपनी प्रवृत्ति में शीशे से अधिक कोमल और पानी के बुलबुले से ज़ियादा कमज़ोर है। वह अपने अस्तित्व के लिए सैकड़ों चीज़ों का मोहताज है और इस संसार में हज़ारों वस्तुएं उसकी शत्रु हैं, उसकी रक्षा वही कर सकता है, जिसकी सत्ता समस्त ब्रह्माण्ड पर हो, तत्वों पर अधिकार हो, वस्तुओं के प्रभाव व विशेषताएं (गुण) उसकी मुट्ठी में हों, वह उनका सृजक भी हो और उनका निरंतरक भी हो वह व्यवस्थापक भी हो तथा उसमें समाप्त कर देने, परिवर्तित कर देने की सामर्थ्य भी हो, उसकी शक्ति में तनिक कमी और उसकी प्रभुत्तता में कभी अस्थिरता उत्पन्न न हो क्योंकि एक तनिक सी अस्थिरता तथा छोटी सी चूक और गड़बड़ी ब्रह्माण्ड व सृष्टि की कोमल संरचना का विनाश और विलोम व विभिन्नताओं के इस कारखाने को टकरा कर अस्त–व्यस्त कर सकती है। उसका ज्ञान सर्वव्यापी हो वह हर समय जागृत व सावधान हो, भूल–चूक, गफलत तथा नींद की झपकी भी कभी उसके पास न आ सके। इसलिए कि सृष्टियां अनगिनत और उनकी आवश्यकताएं असीम और ऐसी गुप्त हैं कि उनको स्वयं ज्ञात नहीं, वे दुधमुंहे शिशु से अधिक पालन–पोषण व संरक्षण का मोहताज व प्यार व स्नेह का पात्र है। उसको ऐसी हस्ती की आवश्यकता है जो माता–पिता से अधिक स्नेही हों परन्तु उसके प्यार में करूणा व युक्ति दोनों हों क्योंकि उसके पालन–पोषण के लिए दोनों अनिवार्य है।

यद्यपि इस बाह्य व आंतरिक संसार पर विचार करने से ज्ञात होता है कि ऐसी हस्ती अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं, तथा आंतरिक व बाह्य संसार की अधिकाधिक निशानियां तथा प्रमाण इस वास्तविकता की ओर मार्गदर्शन करते हैं, जैसा कि स्वयं अल्लाह तआला कहते हैं।

अनुवादः *"शीघ्र ही हम उनको अपनी निशानियां उनके चारों ओर दिखाएंगे तथा स्वयं उनके भीतर भी, यहां तक कि उनके लिए यह वास्तविकता स्पष्ट हो जाए कि वह सत्य है, क्या तुम्हारा पालनहार स्वयं हर वस्तु पर साक्षी होने के लिए*

पर्याप्त नहीं।

(सूरःहा मीम सज्दा–53)

अतः इबादत (उपासना) व बन्दगी (पूजा) का पात्र वही है।

धोखा व असावधानीः-

परन्तु इस संसार में भ्रामक लाभ–हानि की मृगतृष्णा इस प्रकार हिलोरें ले रही है कि मानव दृष्टि बार–बार धोखा खाती है, और अपनी जैसी सैकड़ों असहाय व अधिकार हीन हस्तियों को लाभ व हानि पहुंचाने वाला और समर्थ व अधिकर्ता (मुख़्तार) समझ कर अपना पूज्यनीय व उपास्य (माबूद) बना लेती है, और यह भ्रम कभी–कभी आजीवन नहीं टूटता।

मनुष्य खाये पिये पड़ा रहे तथा उसका वंश चलता रहे, और कभी–कभी ज्ञान के क्षेत्र में आकाश से तारे तोड़ लाए तथा विशाल समुद्र व मरुस्थल पार कर ले परन्तु अपने पैदा करने वाले को न पहचाने इससे बढ़ कर अज्ञान क्या हो सकता है। परन्तु संसार में यही हो रहा था, करोड़ों मनुष्य अपने पैदा करने वाले को नहीं जानते थे, पिता को जानते थे परन्तु पिता को किसने पैदा किया? फिर उसके पिता को किसने पैदा किया? ब्रह्माण्ड को किसने बनाया, धरती व आकाश का सृजन किसने किया? पहाड़ किसने खड़े किए? यह बाग बगीचे किसने उगाए तथा जीविका कौन देता है? और अच्छा बुरा भाग्य किसने बनाया? व कौन मृत्यु व जीवन का मालिक है? आज यदि कोई हिन्दी नहीं पढ़ा है तो लोग कहेंगे कि "अनपढ़" है और यदि उर्दू नहीं पढ़ा है तो मुसलमानों के क्षेत्र में निरक्षर कहेंगे, और अरबी नहीं पढ़ा है तो अरब वाले "उम्मी" (अनपढ़) कहेंगे परन्तु इससे बढ़ कर क्या अज्ञान (जिहालत) हो सकता है कि अपने पैदा करने वाले को न जाने कि वही इबादत (उपासना) का पात्र है, संसार पूर्ण रूप से इससे अनभिज्ञ था इसलिए अल्लाह तआला ने नबियों को भेजा।

सर्वश्रेष्ठ ज्ञानः-

नबियों (अलैहिमुससलाम) के माध्यम से जो ज्ञान मनुष्यों तक पहुंचे हैं, उनमें सर्वश्रेष्ठ, महत्वपूर्ण व आवश्यक ज्ञान अल्लाह की ज़ात (व्यक्तित्व) व गुण व कर्म का ज्ञान है। इस ज्ञान का स्रोत केवल नबी (ईशदूत) हैं, इस ज्ञान के स्रोत व संसाधन तथा इसकी प्रारम्भिक जानकारी व अनुभव भी मनुष्य की पहुंच से बाहर है। यहां अनुमान का सर्वथा आधार ही नहीं, अल्लाह का कोई छायाचित्र व सदृश्य ही नहीं, और वह हर प्रकार की सदृश्यता व समानता से पवित्र (पाक), बुलंद व उच्च है, वह हर उस विचार, निरीक्षण तथा एहसास से उच्च व सर्वथा अलग है जिनसे मनुष्य अवगत व परिचित है तथा जिनसे वह भौतिक संसार में काम लेता है, क्योंकि यह वह क्षेत्र नहीं है जहां बुद्धि के घोड़े दौड़ाए जाएं और अनुमानों की पतंगें उड़ाई जाएं।

यह ज्ञान इसलिए सर्वश्रेष्ठ व सर्वोत्तम घोषित किया गया कि इसी पर मनुष्यों की भलाई व कल्याण

निर्भर है तथा यही अकीदों (विश्वासों) कर्म, नैतिकता व सभ्यता का आधार है। इसी के द्वारा मनुष्य अपनी वास्तविकता से अवगत होता है, ब्रह्माण्ड की पहेली बूझता है और जीवन रहस्य मालूम करता है। इसी से इस संसार में अपनी हैसियत निर्धारित करता है तथा इसी के आधार पर अपने जैसे लोगों से संबंध स्थापित करता है, अपनी जीवन शैली के विषय मे निर्णय और पूर्ण विश्वास, बुद्धिमता तथा स्पष्टता के साथ अपने लक्ष्य निर्धारित करता है।

इसलिए हर सम्प्रदाय व वंश तथा हर युग व वर्ग में इस ज्ञान को उच्चतम श्रेणी प्राप्त है, और प्रत्येक गम्भीर, शुभचिंतक, लक्ष्यधारक तथा परिणाम की चिन्ता करने वाले मनुष्य ने इस ज्ञान से घनिष्ट रूचि व लगाव का प्रदर्शन किया। क्योंकि इस ज्ञान से वंचित होना (चाहे जान बूझ कर हो अथवा अनजाने में) ऐसी वंचितता का कारण है जिससे बढ़ कर कोई दुर्भाग्य नहीं, और ऐसी बर्बादी व विनाश का कारण है जिससे बढ़ कर कोई विनाश नहीं।

..... जारी.....

प्यारे नबी की प्यारी.....

(3) उस जान को हलाक करना जिस को अल्लाह ने हराम किया है (4) सूद खाना (5) यतीम का माल खाना (6) लड़ाई के दिन पीठ मोड़ना (7) भोली भाली पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाना।

(बुखारी–मुस्लिम)

सूद की हुरमतः-

अल्लाह तआला कुर्आन में इरशाद फरमाता है अनुवादः जो लोग सूद खाते हैं वह खड़े न हो सकेंगे मगर इस तहर जिस तरह एक शख़्स खड़ा हो और उसके हवास को शैतान ने अपनी लपेट से खो दिया हो, उसकी वजह यह है कि उन्होंने कहा था कि सूद तो सौदागरी की तरह है, हालांकि अल्लाह ने सौदागरी को जाइज़ किया है और सूद को हराम किया है और जिस शख़्स के पास नसीहत पहुंच चुकी उसके रब की तरफ से फिर वह बाज आ गया तो उसी का है जो ले चुका और उसका मुआमला अल्लाह के हवाले है और जिसने फिर सूद लिया तो वही लोग दोज़खी हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह सूद को घटाता है और खैरात को बढ़ाता है और अल्लाह हर गुनहगार काफिर से नाखुश है, ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सूद को छोड़ दो अगर तुम मुसलमान हो, और अगर ऐसा न करो गे तो फिर अल्लाह और उसके रसूल से लड़ने के लिए तैयार हो जाओ, और अगर तुम तौबा करो तो मूल धन तुम्हारा है न तुम किसी का नुकसान करो न तुम्हारा कोई नुकसान करे।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूद खाने वाले और खिलाने वाले पर लानत फरमाई है। (मुस्लिम)

तिर्मिजी शरीफ की रिवायत में इतना और ज़ियादा है कि गवाही देने वाले और लिखने वाले पर लानत फरमाई है।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

–पिछले अंक से आगे

पवित्र क़ुर्आन की मौलिक शिक्षाएं

–हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

–हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

"वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई पूज्य नही। वह बादशाह है अत्यन्त पवित्र, सर्वथा सलामती, निश्चिन्ता प्रदान करने वाला, संरक्षक, प्रभुत्वशाली, प्रभावशाली, (टूटे हुए को जोड़ने वाला) अपनी बड़ाई प्रकट करने वाला। महान और उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो वे करते हैं।"

"वही अल्लाह है जो संरचना का प्रारूप है, अस्तित्व प्रदान करने वाला, रूप देने वाला है। उसी के लिए अच्छे नाम हैं। जो चीज़ भी आकाशों और धरती में है, उसी की तस्वीह कर रही है। और वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।"

(सूरः अल हश्रः 22–24)

इस्लामिक विश्वास जो अल्लाह तआला ने मानव जाति को दिए हैं मौलिक रूप से वह 6 हैं और तौहीद (अल्लाह को एक मानना) उसका पहला विश्वास है। सबसे पहले अल्लाह को मानना और उसका आज्ञापालन करना है। फिर फिरिश्तों को मानना जो आसमानी सृष्टि हैं और नूर (प्रकाश) से बने हैं। वह सब के सब अल्लाह के आज्ञाकारी हैं, फिर अल्लाह की किताबों और अल्लाह के रसूलों और क़ियामत के दिन पर ईमान लाना है। और तक़दीर पर भी ईमान लाना है कि अच्छी हो या बुरी वह अल्लाह ही की तरफ से है। इस सब का उद्गम पहला विश्वास तौहीद अर्थात अल्लाह को एक मानना है। वह एक है और केवल एक है, हम फिरिश्तों पर ईमान इसलिए लाते हैं कि हम को उन पर ईमान लाने का अल्लाह ने आदेश दिया है, अल्लाह तआला ने फिरिश्तों को केवल अपने काम के लिए पैदा किया है फिरिश्ते वही करते हैं जिसका उनको अल्लाह से आदेश मिलता है। अल्लाह की किताबों पर भी हम इस लिए ईमान लाते हैं कि अल्लाह ने हमको उन पर ईमान लाने का आदेश दिया है। वह अल्लाह का कलाम है जो उसने अपने नबियों पर उतारी हैं। रसूलों पर भी हम इस लिए ईमान लाते हैं कि अल्लाह ने हम को उन पर ईमान लाने का आदेश दिया है। वह सब अल्लाह के भेजे हुए हैं और वह अल्लाह के आदेश और संदेश हम मनुष्यों तक पहुंचाए हैं। आखिरत के दिन (कियामत) पर इस लिए ईमान लाते हैं कि हम को आखिरत के दिन पर ईमान लाने का अल्लाह की तरफ से आदेश है और वह दिन अल्लाह की ओर से हिसाब व किताब (लेखा जोखा) और न्याय का दिन है। इसी प्रकार हम तक़दीर पर ईमान लाते हैं इसलिए कि हम को तक़दीर पर ईमान लाने का अल्लाह ने आदेश दिया है। मानव जाति तथा संसार की हर बात अल्लाह की ओर से नियुक्त है।

इन तमाम बातों पर ईमान लाने का आदेश हमको अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा दिया।

विश्वास के पश्चात कर्म हैं जो विश्वास को मिला कर पांच हैं, नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज।

नमाज़ दिन रात में पांच बार हैं, फ़ज्र, जुह्र, अ़स्र, मग़्रिब और इशा।

रोज़ा अर्थात सुब्हे सादिक़ (प्रभात) से ले कर सूर्यास्त तक अल्लाह की रिज़ा की ख़ातिर खाने पीने और बीवी से आनन्द लेने से अपने को रोकना है। रोजे की यह प्रक्रिया हर साल रमज़ान के पूरे महीने में पूरी करनी होती है।

ज़कात अर्थात अपने माल से हर साल माल का चालीसवां भाग गरीब मुसलमानों को देना है। जक़ात साहिबे निसाब माल वाले पर ही अनिवार्य है।

हज़ अर्थात जिस मुसलमान को हज़ के जमाने में मक्का मुकर्रमा आने जाने पर सामर्थ्य हो वह जीवन में एक बार हज़ करे।

इस्लाम की जितनी बातें हैं चाहे उनका सम्बन्ध विश्वास से हो या कर्म से सब तौहीद (अल्लाह को एक मानना से सम्बन्धित है और उसके अन्तर्गत हैं। अल्लाह तआला की तरफ से मुकर्रर किया हुआ खिलकत का निजाम इसी तौहीद के गिर्द घूमता है इसलिए इस्लाम के निज़ाम में पहली और मौलिक आधारशिला तौहीद (अल्लाह को एक मानना) है।

तौहीद के बिना हर कर्म व्यर्थ है इस लिए मनुष्य के मोक्ष के लिए तौहीद का विश्वास अनिवार्य है।

पवित्र कुर्आन में जगह जगह तौहीद को इस तरह समझाया गया है कि इंसान उसे आसानी से समझ सके अतएव अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में समझाया है, अनुवादः

"निःसंदेह आकाशों और धरती की रचना में रात और दिन के आगे पीछे बारी–बारी आने में उन बुद्धिमानों के लिए निशानियां हैं, जो खड़े बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे अल्लाह को याद करते हैं और आकाशों और धरती की रचना में सोच–विचार करते हैं। (वे पुकार उठते हैं) "ऐ हमारे रब! तू ने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया है। महान है तू, अतः तू हमें आग की यातना से बचा ले।"

(आले इमरानः190–191)

अल्लाह तआला ने सू–रए–अनआम में अपने विषय में फरमाया, अनुवादः

"और वही है जिसने आकाश से पानी बरसाया, फिर हम ने उस के द्वारा हर प्रकार की वनस्पति उगाई, फिर उससे हमने हरी–भरी पत्तियां निकालीं और तने विकसित किए, जिस से हम तले–ऊपर चढ़े हुए दाने निकालते हैं और खजूर के गाभे से झुके पड़ते गुच्छे भी और अंगूर, ज़ैतून और अनार के बाग़ लगाए, जो एक दूसरे से मिलते जुलते भी हैं और एक दूसरे से भिन्न भी होते हैं। उसके फल को देखो, जब वह फलता है और उसके पकने को भी देखो! निःसंदेह ईमान लाने वाले

लोगों के लिए इन में बड़ी निशानियां हैं।

(अल–अनआमः 99)

आयत में जिन वनस्पतियों का ज़िक्र है वह सब स्वतः नहीं हुई न स्वतः बारिश हुई अल्लाह ने पानी बरसाया और उस के द्वारा इन वनस्पतियों को उगाया।

अल्लाह तआला ने सू–रए–लुकमान में फरमाया, अनुवादः

"उसने आकाशों को पैदा किया, (जो थमे हुए हैं) बिना ऐसे स्तंभों के जो तुम्हें दिखाई दें। और उसने धरती में पहाड़ डाल दिए कि ऐसा न हो कि तुम्हें ले कर डांवाडोल हो जाए और उसने उस में हर प्रकार के जानवर फैला दिए। और हम ने ही आकाश से पानी उतारा, फिर उसमें हर प्रकार की उत्तम चीजें उगाईं, यह तो अल्लाह की संरचना है। अब तनिक मुझे दिखाओ कि उससे हट कर जो दूसरे हैं (तुम्हारे ठहराए हुए प्रभु) उन्होंने क्या पैदा किया। नहीं, बल्कि ज़ालिम तो एक खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।" (लुकमानः 10–11)

एक और जगह पवित्र कुर्आन में अया है, अनुवादः

"अच्छा बतलाओ किस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और किसने तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया (हम ने) फिर हम ही ने उससे सरसब्ज़ बाग़ उगाये तुम्हारा काम तो न था कि तुम उनके दरख्तों को उगाते, तो क्या अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद (पूज्य) है (हरगिज़ नहीं) बल्कि ये लोग रास्ते से अलग हो रहे हैं। भला किसने ज़मीन को क़रारगाह (ठहरने की जगह) बनाया और उसमें नहरें बहाई और उसके लिए पहाड़ बनाये और किसने दरयाओं के ओट बनाई (यह सब कुछ अल्लाह ने बनाया) तो क्या अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद है? (हरगिज़ नहीं) यह लोग जो शिर्क करते हैं खुदा की शान उनसे बुलन्द है।

(अन–नम्लः 60–63)

इन आयतों में हर आयत में अल्लाह की तौहीद बयान की गई है। पवित्र कुर्आन में इसी प्रकार सृष्टि की चीज़ों द्वारा अल्लाह की तौहीद इस तरह समझाई गई है कि मनुष्य सरलता से समझ ले और स्वीकार कर ले। अनाज के दाने, अंगूर की बेलें, खजूर के खोशे, तरकारियां, ज़ैतून का तेल, दरखतों के झुण्ड, किस्म किस्म के मेवे, चरिन्द और परिन्द (पशु पक्षी) यह सब चीजें साबित करती हैं कि उन का कोई निर्माता है।

सृष्टि की जटिल व्यवस्था सूर्य का कार्य चन्द्रमां का कार्य नक्षेत्रों के कार्य, हवाओं का चलना, पानी बरसना, दिन रात का आना जाना आदि अर्थात सृष्टि की समस्त व्यवस्था स्वतः नहीं है उस का कोई चलाने वाला है वही निर्माता है वही जग का स्वामी है और वह केवल एक है, अतएव हर वह व्यक्ति जो देखने वाली आंख और सोचने वाला दिमाग रखता है संसार की व्यवस्था और प्रबन्ध देख कर पुकार उठता है कि यह सब किसी निर्माता के बिना कैसे वजूद में आ सकता है? और

यह सांसारिक व्यवस्था किसी स्थाई प्रबन्धक के बिना न चल सकती है न स्थिर रह सकती है।

सृष्टि की व्यवस्था चलाने वाला एक और केवल एक है अगर दो या अधिक होते तो व्यवस्था में बाधा पड़ती हम देखते हैं कि जिस देश या जिस क्षेत्र में दो हाकिमों के हुक्म चलने लगते हैं उस देश की व्यवस्था तितर बितर हो जाती है। संसार की प्राकृतिक व्यवस्था इस बात की दलील है कि, इस का प्रबन्धक एक है सूरज का निकलना और डूबना दिन रात का आना और जाना मनुष्य की मौत यह सब अपने वक्त पर आते हैं इन सब कामों में अल्लाह के सिवा किसी को परिवर्तन का कोई अधिकार नहीं। पवित्र कुर्आन में आया है, अनुवादः

"इब्राहीम अलै0 ने (नमरूद बादशाह से) कहा कि अल्लाह तआला सूरज को पूरब से निकालता है तू (एक ही दिन) पश्चिम से निकाल दे इस पर वह (नमरूद) काफिर चकित रह गया (और निरुत्तर हो गया)"।

(अल बकराः 258)

दूसरी जगह फरमाया, अनुवादः "हम ने हर चीज़ को अन्दाज़े से पैदा किया।" (अल कमरः 49)

और फरमाया, अनुवादः

"तो तुम अल्लाह की तस्बीह किया करो शाम के वक्त और सुब्ह के वक्त और तमाम आसमानों और ज़मीन में उसी की प्रशन्सा होती है और दोपहर के बाद अर्थात जुह्र के वक्त भी, वह जीवधारी को निर्जीव से बाहर लाता है और निर्जीव को जीवधारी से बाहर लाता है और धरती को उसके मृत्यु हो जाने के बाद उस को जीवित करता है इसी प्रकार तुम लोग (कब्रों से) निकाले जाओगे और उसी की निशानियों में से एक यह है कि तुम को मिट्टी से पैदा किया फिर थोड़े ही दिनों बाद तुम पूरे आदमी बन कर फैले हुए फिरते हो और उसी की निशानियों में से यह है कि उस ने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी जिंस की बीवियां बनाई ताकि तुम को उनके साथ आनन्द मिले और तुम मियां बीवी में महब्बत और हमदर्दी पैदा की इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सोच समझ कर काम लेते हैं और उसी की निशानियों में से आसमानों और ज़मीन का बनाना है और तुम्हारी बोली बाली और रंगों का अलग अलग होना है इस में समझ रखने वालों के लिए निशानियां हैं और उसी की निशानियों में से तुम्हारा सोना लेटना है। रात और दिन में, और उसी की रोज़ी को तुम्हारा तलाश करना है। इन में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सुनते हैं, और उसी की निशानियों में से यह है कि

वह तुम को बिजली दिखाता है जिससे डर भी होता है और उम्मीद भी होती है, और वही आसमान से पानी बरसाता है, फिर उस पानी से धरती को मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा कर देता है, इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक्ल रखते हैं और उसी की निशानियों में से यह है कि आसमान और ज़मीन उस के हुक्म से काइम हैं। फिर जब तुम को पुकार कर ज़मीन में से बुलाएगा तो तुम यकबारगी निकल पड़ोगे, और जो भी आसमानों और ज़मीन में मौजूद हैं सब उसी के ताबे (वशीभूत) हैं और वही है जो पहली बार पैदा करता है फिर वही दोबारा पैदा करेगा और यह उसके लिए अधिक सरल है और आसमानों और ज़मीन में उसकी शान आला है। और वह बड़ा प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी है।''

(अर्रूमः 17–27)

यह प्राकृतिक तर्क हैं जिन के समक्ष मानव बुद्धि को झुकना पड़ता है और इस बात को मानना पड़ता है कि धरती से लेकर आकाश तक एक सम्पूर्ण प्राकृतिक व्यवस्था है तथा यह पूरी व्यवस्था एक अत्यंत प्रभुत्वशाली विधान के अंतर्गत चल रही है जिसमें एक व्यापक सत्ता, त्रुटि रहित नीति निर्दोष ज्ञान दृष्टिगोचर होता है जिससे सिद्ध होता है कि इस व्यवस्था का एक ही व्यवस्थापक है और वही अल्लाह है अतएव सू–रए–इब्राहीमः10 में अल्लाह तआला ने फरमाया, अनुवादः

''क्या आसमानों और ज़मीन पैदा करने वाले अल्लाह में शक है''?।

इस संसार की व्यवस्था इस लिए व्यवस्थित तथा स्थिर है कि इस का व्यवस्थापक केवल एक है और वह अल्लाह है और उसी के हाथ में सत्ता है। तौहीद केवल आस्था नहीं है अपितु वास्तविकता है मानव का व्यक्तिगत जीवन हो अथवा सामूहिक जीवन हो तौहीद के विश्वास से अनुशासित हो जाता है। वह अपने को एक का बन्दा समझता है उसी को राजी करता है और कई को राजी करने की परेशानी से सुरक्षित हो जाता है।

इसी प्रकार एक तौहीद का मानने वाला निडर, भयरहित, साहसी और वीर होता है जब कि मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) तथा काफिर (नास्तिक) कायर, भीरू तथा साहस रहित होते हैं, तौहीद का मानने वाला इन्सान अहंकारी तथा घमण्डी नहीं होता है अपितु उसमें नम्रता तथा लीनता आ जाती है। तौहीद का मानने वाला तंग नज़र (संकीण दृष्टि) नहीं होता वह अपने आधीनों का हक नहीं मारता इसलिए कि वह विश्वास रखता है कि उसको एक दिन अपने कर्मों का अल्लाह को हिसाब देना और उत्तर देना है तौहीद को मानने वाला अल्लाह के अतिरिक्त न किसी के सामने सर झुकाता है न हाथ फैलाता है वह केवल अल्लाह से दुआ माँगता है।

तौहीद के विश्वास का मुसलमानों के सामूहिक जीवन पर यह प्रभाव पड़ता है कि मानव समाज की व्यवस्था सम्पूर्ण न्याय तथा शुद्ध मानव समानता पर आधारित होती है संसार में विकार तथा उपद्रव का वास्तविक कारण तौहीद के विश्वास का अभाव है।

अल्लाह के इरादे में कोई साझी नहीं अल्लाह जो चाहता है स्वयं करता है संसार की व्यवस्था में कोई उसका साझी नही वह जो चाहता है वही होता है वास्तविक तौहीद मन तथा प्राण से अल्लाह को एक मानना है मनुष्य का बड़ा बुत (मूर्ति) वह है जो उसने अपने मन में छुपा रखा है इस बुत को तोड़ना ही वास्तविक तौहीद है लाइलाह इल्लल्लाह (नहीं कोई पूज्य मगर अल्लाह) के विश्वास से यह बुत टूटता है तौहीद के विश्वास से दिल में अल्लाह का भय अल्लाह की रिजा (प्रसन्नता) और अल्लाह से प्रेम की भावना उत्पन्न होती है इसी लिए तमाम विकृत कल्पनाओं को दूर करने के लिए हर नमाज़ में और हर नमाज़ की हर हर रकअ़त में सू–रए–फातिहा पढ़ने का आदेश दिया गया है जिस में हम यह कहते हैं, अनुवादः

"ऐ जग के पालनहार हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं।

❖❖❖

नया साल मुबारक हो.....

दिखाना घुमाना, शरबत पीना और पिलाना, मरसिये और नौहे पढ़ना, ताज़िये रखना ताजियों पर चढ़ावा चढ़ाना ताज़ियो के गिर्द रौशनी करना, आ़शूरा की रात ताजियों के गिर्द रौशनी करके उसकी ज़ियारत को निकलना क्या यह सारी खुराफ़ात करना चाहिए या वह करना चाहिए जो अल्लाह के रसूल और उनके सहाबा ने किया। हम को चाहिए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और खुलफाए राशिदीन के तरीक़े अपनाएं और अपनी गढ़ी हुई खुराफात को छोड़ दें।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

और दुनिया के बे हकीकत होने का बयान है और आगे कहा जा रहा है कि मौत का क्या डर वह तो हर हाल में अपने समय पर आ कर रहेगी।

7. यह मुनाफिकों का उल्लेख है कि अगर मुसीबत पड़े तो फौरन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आरोप लगा देते कि उनकी ग़लत नीति का परिणाम है, कहा जा रहा है कि सब अल्लाह के आदेश से ही होता है, हर वस्तु का आविष्कारक वही है और आगे इसका और स्पष्टीकरण है कि हर भलाई और बुराई का आविष्कारक अल्लाह ही है मगर बन्दे को चाहिए कि नेकी और अच्छाई को अल्लाह का फज़्ल समझे और सख्ती और बुराई को अपने कर्मों का बुरा फल जाने, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इस का आरोप न लगाए वे न उसके आविष्कारक हैं और न कारण, उनका पैदा करने वाला अल्लाह है और कारण तुम्हारे कुकर्म हैं।

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

अपने बच्चों की फिक्र कीजिए

—इदारा

मशहूर हदीस का मफहूम है "तुम में से हर एक ज़िम्मेदार है, और हर जिम्मेदार से उसके मुतअल्लिक़ीन के बारे में सवाल होगा" जाहिर है मुख़ातब उम्मत है यानी हर मुसलमान जिम्मेदार है, हर मुसलमान बल्कि हर इंसान से कुछ लोग मुतअल्लिक़ होते हैं। अगर खानदान वाला है तो उसके बच्चे उसकी बीवी ऐसे मुतअल्लिकीन हैं जिन का वह एक तरह का हाकिम है, उन बच्चों और बीवी का वह जिम्मेदार है उनके बारे में उससे सवाल होगा, हां यह सही है कि उसकी जिम्मेदारी है कि वह अपनी औलाद और बीवी और जो उसके मुतअल्लिक़ीन हैं उनकी ज़रूरियाते जिन्दगी मुहय्या करने में कोताही न करे अगर कोताही करेगा और उनको तकलीफ़ पहुंचेगी तो वह जवाबदेह होगा, इस बात को शायद सब मानते हैं इस जिम्मेदारी को पूरा करने में अधिकतर लोग कोताही नहीं करते, लेकिन इंसान की ज़िन्दगी का एक अहम मक़सद आख़िरत की ज़िन्दगी को संवारना है बल्कि अगर यह कहा जाय कि इन्सान की इस जिन्दगी का मकसद ही अख़िरत की ज़िन्दगी को संवारना है तो यह बात सत फीसद सच होगी मगर ज़रा मुआशरे पर ध्यान दीजिए तो आपको इस जिम्मेदारी के सिलसिले में बड़ी कोताही नज़र आएगी।

कितने लोग हैं कि उनकी औलाद नमाज़ नहीं पढ़ती बल्कि बड़ी तादाद ऐसे लोगों की मिलेगी कि वह नमाज़ पढ़ना जानते ही नहीं हैं, यही हाल बहुत सी बीवियों का है और बड़े ही अफसोस के साथ यह कहना पड़ता है कि बहुत से आक़िल बालिग़ मुसलमान भी न नमाज़ पढ़ते हैं न नमाज़ पढ़ना जानते हैं।

दीन का काम करने वालों की ख़िदमत में अर्ज़ है कि ऐसे भाई जो दीन से तअल्लुक रखते हैं नमाज़ रोज़े के पाबन्द हैं मगर अपनी औलाद के हक़ में दीन के मुआमले में लापरवाह हैं उनको तवज्जुह दिलाएं कि वह अपनी औलाद की फ़िक्र करें जैसे भी करें उनको दीन सिखाने और दीन से जोड़ने की तरफ तवज्जुह दिलाएं।

जो नौजवान दीन से नावाकिफ़ हैं उनके लिए सुब्ह शाम के औक़ात में कुछ वक़्त ले कर उनको दीन की तालीम दिलाएं ताकि वह अपनी औलाद, अपनी बीवी, भाई, बहन वगैरह को दीन से जोड़ें ताकि उनकी और उनके मुतअल्लिक़ीन की आखिरत संवर सके। बन्दा भी इस सिलसिले में कोशिश करता रहा है अलहम्दुलिल्लाह बेशक जो लोग तब्लीग़ ज़माअ़त से जुड़ते हैं वह खुद दीनदार बन

शेष पृष्ठ....26 पर

–देवनागरी लिपि में उर्दू

नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत

–मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी रह0 –हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

दीन में नमाज़ का दरजाः–

अल्लाह व रसूल पर ईमान लाने और तौहीद व रिसालत की शहादत (गवाही) अदा करने के बाद सब से पहला और सब से अहम जो फरीज़ा बन्दे पर अल्लाह की तरफ से आयद (लागू) किया गया है, वह नमाज़ है, कुर्आन मजीद में मुतअ़द्दिद (अनेक) जगह ईमान और तौहीद के बाद अव्वलीन अमली फरीज़ा की हैसियत से इस का जिक्र किया गया है, सू–रए–बकरा के शुरु ही में कुर्आन मजीद से हिदायत हासिल करने वाले गिरोह का हाल बयान करते हुए फरमाया गया है, अनुवादः "वह लोग जो गै़ब पर ईमान लाते हैं और नमाज़ काइम करते हैं"।

(आयतः 3)

और सू–रए–कियामत में ईमान न लाने वालों और नमाज़ न पढ़ने वालों का जुर्म भी इसी तरतीब से बयान किया गया है, यानी उन का सबसे बड़ा और सबसे पहला जुर्म तो ईमान न लाना बताया गया है, और उस के बाद दूसरे दरजा का जुर्म नमाज़ न पढ़ना करार दिया गया है, इरशाद है, अनुवादः "न तो ईमान लाया और न नमाज़ पढ़ी"।

(आयतः31)

और सू–रए–बय्यिना में तौहीद के बाद दावते अंबिया का दूसरा मुतालबा नमाज़ ही को करार दिया गया है, अनुवादः "और नहीं हुक्म किया गया उन लोगों को सिवा इस के कुछ भी कि वह इबादत करें अल्लाह ही की, खालिस करते हुए उसी के वास्ते इताअत बिल्कुल यकसू हो कर, और काइम करें नमाज़, और अदा करें ज़कात"।

(आयतः 5)

बहरहाल जो शख्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पैगम्बरे बरहक मान कर आप की दीनी दावत को क़बूल कर ले, इस्लाम उसके सामने सब से पहला और सबसे अहम मुतालबा नमाज़ ही का रखता है, खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भी यही दस्तूर था कि इस्लाम में हर नये दाखिल होने वाले से तौहीद का इकरार लेने के बाद आप नमाज़ का अहद (वचन) लिया करते थे।

दीन में नमाज़ का दरजा और उसकी यह अहम्मीयत कोई खालिस हाकिमाना बात और नाकाबिले फहम किस्म का कोई ऐसा राज़ नहीं है जिस पर बिला सोचे समझे सिर्फ ईमान ही लाया जा सकता हो बल्कि वाकिआ (वास्तकिवकता) यह है कि अगर खुद नमाज़ ही की हकीकत पर गौ़र किया जाए तो किसी न किसी दरजे में यह बात सब की समझ में आ सकती है कि दीन में नमाज़ का यह दरजा और यह मुकाम क्यों है।

नमाज़ ईमान और इस्लामी जिन्दगी के दरमियान की कड़ी है:-

हक़ीक़त यह है कि कल–मए–तय्यिबा की तस्दीक़ करने यानी अल्लाह व रसूल पर ईमान लाने के बाद अहकामे इलाही के पाबन्द हो कर और शरीअ़ते मुहम्मदिया का कामिल इत्तिबा करते हुए जिस तरह की इस्लामी जिन्दगी यानी फरमांबरदारी वाली जिन्दगी गुजारना एक मोमिन के लिए ज़रूरी हो जाता है, नमाज़ ही उस जिन्दगी को पैदा करने का सबसे बड़ा ज़रीआ़ है और गोया कि वही ईमान और इस्लामी जिन्दगी के दरमियान की कड़ी है और इसी लिए उस का दरजा ईमान के बाद और बाक़ी तमाम दीनी आमाल से पहले है।

अगर हम तम्सील (उपमा) के तौर पर ईमान को बीज और जड़, और दीन के बाक़ी सारे अमली निज़ाम को दरख़्त करार दें तो नमाज़ की हैसियत उस दरख़्त के तने की होगी जो खुद अगरचे बीज ही से पैदा होता है लेकिन उस के ऊँपर वाली तमाम छोटी बड़ी और मोटी पतली शाखें और फूल फल पत्तियां उसी तने से निकलती हैं और उसी पर काइम होती हैं इस हक़ीक़त को जरा वजाहत और तफ़्सील से समझने के लिए उमूरे जैल पर ग़ौर कीजिए।

कल–मए–तय्यिबा की शहादत दे कर और अल्लाह व रसूल पर ईमान ला कर हम ने इकरार और अहद किया कि अल्लाह ही हमारा इलाह और माबूद व मौला है, लिहाजा हम उसी की इबादत व बन्दगी करेंगे और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसी के रसूल हैं लिहाजा हम उन की लाई हुई शरीअ़त पर चलेंगे और उनके अहकाम मानेंगे, गोया ईमान ला कर हम ने अपने मुतअ़ल्लिक तै कर लिया कि अब हमारी सारी जिन्दगी अल्लाह के अहकाम के मातहत और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाई हुई शरीअ़त के मुताबिक गुजरेगी।

लेकिन अमलन (व्यवहारिक रूप से) इस तरह की जिन्दगी गुजारने के लिए हमारे वास्ते जरूरी है कि–

(1) हमारे सामने बार बार इस ईमानी मुआ़हदा (संविदा) की तजदीद और याददिहानी इस तरह होती रहे कि इसी के साथ और इसी के ज़िम्मे (अन्तर्गत) में अल्लाह तआ़ला की अज़मत और किबरियाई और उसकी शाने जलाल व जमाल का तसव्वुर भी हमारे लिए ताजा होता रहा करे ताकि उसके जरिए अल्लाह तआ़ला की महब्बत और उसके खौफ व ख़शीयत के वह आला जज़बात पैदा होते और नश्व व नुमा पाते रहें जो हम को अल्लाह तआला की कामिल इताअ़त और रिज़ा जोई के लिए बेचैन करते रहें।

(2) फिर इन जज़बात के मुताबिक अमल की मश्क़ और तरबीयत का भी कोई निज़ाम हो, ताकि यह जज़बात अमल के कालिब में आकर और अमल की ताक़त को साथ ले कर अमली जिन्दगी पर अपना पूरा असर डाल सके।

(3) फिर इसी के साथ साथ कानूने जज़ा व सज़ा की भी यक़ीन दिहानी होती रहे।

(4) नीज़ अल्लाह तआला से हम इस "इस्लामी जिन्दगी" की तौफ़ीक़ भी बार बार मांगते रहें कि उस की तौफीक़ व मदद के बगैर कुछ भी नहीं हो सकता।

(5) फिर हमारा माहौल भी इस राह में हमारे साथ कुछ साज़गारी करे क्योंकि इंसान की जिन्दगी की साख्त मुकर्रर करने में तमाम दूसरी खारजी चीज़ों से ज़ियादा उस का माहौल मुअस्सिर होता है, और इंसान सब से ज़ियादा अपने माहौल ही से असर लेता है।

जाहिर है कि जब इन चीजों का इन्तिज़ाम व एहतिमाम न हो हमारे आज़ादी ख्वाह और सरकश नफ़्स के लिए मरजीयाते इलाहिया के पाबन्द और शरीअत के मातहत हो कर जिन्दगी गुज़ारना बहुत ही मुश्किल मरहला है।

अब आप नमाज़ की हकीक़त और उसके अनासिर व अजज़ा और उसकी हैअते तरकीबी पर ज़रा गौर कीजिए और देखिए कि ईमान लाने के बाद इस्लामी जिन्दगी गुजारने और उसको आसान बनाने के लिए जिन मुहर्रकात और (जिन इन्तिज़ामात की हम को जरूरत थी जिन की कुछ निशानदेही सूतूरे बाला में की गई है) इन सब को नमाज़ में कैसी हिक्मते बालिगा के साथ समोया गया है, और नमाज़ इन तमाम चीज़ों का कैसा हैरत अंगेज़ बल्कि मुअजिजनुमा नुस्–खए–जामिआ है।

ईमान के बाद मअ्सीयत गफ़्लत ही से होती है और नमाज़ इजा-लए-ग़फ़्लत की आला तदबीर है:-

यह एक खुली हुई हक़ीक़त है कि अल्लाह तआला को जानने और मानने और उससे इताअत व बन्दगी का अहद करने के बाद भी आदमी से उसकी नाफरमानी जो सरजद होती है तो जियादा तर उसकी वजह गफ़लत ही होती है और शैतान इंसान की अक्ल व बसीरत पर ग़फ़लत व मदहोशी का परदा डाल कर ही उस पर छापा मारता है और उससे नाफरमानी कराता है लेकिन जैसे ही अल्लाह की सच्ची याद और उस की अज़मत व किबरियाई और जलाल व जबरूत की याददिहानी के जरीये ग़फ़लत के इस परदे को चाक कर दिया जाए तो खुदा शनास और खुदा तर्स आदमी संभल जाता है और बुराइयों से उसका कदम रुक जाता है कुर्आन मजीद में फितरते इंसानी की इसी कैफियत को इस तरह बयान किया गया है, अनुवादः "बेशक जो लोग डर रखते हैं जब उन्हें कोई शैतानी वसवसा लग जाता है तो वह अल्लाह की याद में लग जाते हैं, तो यकायक उनकी आंखें खुल जाती हैं (और ग़फ़लत का परदा चाक हो जाता है) आराफ–201।

बहर हाल यह एक वाज़ेह हक़ीक़त है कि ईमान के बाद नाफ़रमानी उमूमन ग़फ़लत ही के रास्ते से आती है और नमाज़ उस गफ़लत का सब से अच्छा इलाज है क्योंकि वह सरासर अल्लाह की याद है बल्कि यादे इलाही ही नमाज़ की गायत है, इरशादे खुदावन्दी है,।

अनुवादः "मेरी याद के लिए नमाज़ काइम करो"।

(ताहाः 14)

नमाज़, इंसान के तमाम जाहिर व बातिन का "जिकरे इलाही" है:-

फिर इंसान निरी ज़बानी यादे इलाही ही नहीं है, बल्कि वाकिआ यह है कि "यादे इलाही" का जो तरीक़ा ग़फ़लत के दूर करने और महब्बत व शुक्र के जज़बात को उभार कर आमा–दए–इताअ़त करने में सबसे ज़ियादा मुअस्सिर हो सकता है वह नमाज़ ही है क्योंकि नमाज़ में क़ल्ब व ज़बान और दूसरे तमाम आजा भी एक खास तरतीब और तनासुब के साथ यादे इलाही और मजाहिरे उबूदीयत में हम आहंग हो कर हिस्सा लेते हैं और अपने अपने दाइरे में अपना अपना वज़ीफा अदा करते हैं, क़ल्ब में अल्लाह तआला की अज़मत व किबरीयाई का ध्यान होता है, फिर उसी के मुताबिक ज़बान उस की तस्बीह व तक़्दीस और तहमीद व तमजीद में मसरुफ होती है और जिस्म सर से पांव तक जिक्र व इबादत और नियाज़ व उबूदीयत की तस्वीर बना होता है, कभी दस्त बस्ता खड़ा होता है, कभी झुक जाता है, और कभी सजदे में गिर कर अपनी बन्दगी व नियाज़मन्दी का आखिरी मुजाहरा करता है। हजरत शाह वलीउल्लाह रह0 हुज्जतुल्लाहुल बालिगा में फरमाते हैं "एक यह कि क़ल्ब अल्लाह तआ़ला की ला इन्तिहा अज़मत व जलाल के ध्यान से सर अफगन्दा हो, दूसरे यह कि अल्लाह तआला की इस अज़मत व किबरियाई और आजज़ी व सरअफगन्दगी को बेहतर से बेहतर अल्फ़ाज़ में अपनी ज़बान से अदा करे, और तीसरे यह कि बाक़ी तमाम ज़ाहिरी आज़ा को भी अल्लाह तआला की अज़मत व जबरूत और अपनी आजज़ी व बन्दगी की शहादत के लिए इस्तेमाल करे"।

(हुज्जतुल्लाहुल बालिगा:1/72)

नमाज़, ग़फ़लत का इलाज और मआ़सियात से बचाओ का सामान क्यों कर?:-

जाहिर है कि नमाज़ की शक्ल में जब अल्लाह का ज़िक्र और उसके सामने आजज़ी नियाज़मन्दी का मुज़ाहरा इतना हमागीर और इतना कामिल होगा और इंसान के तमाम जाहिर व बातिन पर उसकी चोट पड़ेगी, यानी उस का दिल और उसकी ज़बान और उस के तमाम जाहिरी आज़ा सब यक्सां तौर पर उस में शरीक और उससे मुतअस्सिर होंगे, और फिर दिन रात कई कई बार इस अमल और इस वजीफे का इआ़दा होगा तो गफ़लत इसके मुकाबले में कहां तक ठहर सकेगी, और इंसान से मआसियात और फवाहिश व मुनकरात का सुदूर क्योंकर होगा। नमाज़ की यही तासीर है जिस को कुर्आन मजीद की इस मशहूर आयत में बयान फरमाया गया है, अनुवादः "बेशक नमाज़ बेहयाई की बातों और बुरे कामों से रोकती है, और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है"। (अल–अ़नकबूतः 45)

"और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है" के अल्फ़ाज़ ने यह हक़ीकत भी वाज़ेह कर दी कि नमाज़ में फहश व मुन्कर से रोकने की तासीर का राज यह है कि

वह सरासर अल्लाह की "याद" है, इसी से यह भी मालूम हो गया कि यह तासीर उन्हीं नमाज़ों में होगी जिनमें "जिक्र" और "यादे इलाही" की सिफत कामिल तौर पर पाई जाएगी, पस आज कल आम तौर से जिस तरह ग़फ़लत के साथ नमाजें पढ़ी जाती हैं कि बसा औकात पढ़ने वालों को यह भी खबर नहीं होती कि उन्होंने अपनी नमाज़ों में अपने रब से क्या कहा और क्या मांगा, सो शऊर और हुजूर से खाली ऐसी नमाज़ों से तक़्वे वाली जिन्दगी पैदा नहीं होती और बुरी आदतें नहीं छूटतीं तो इस में नमाज़ का क्या कुसूर। जिस दाने में जान और मग़्ज़ ही न हो उससे दरख्त क्यों कर पैदा हो सकता है।

फारसी शेअ़रः

ज़ौक़ बायद ता दिहद ताअ़ात बर
मग़्ज़ बायद ता दिहद दानाशज़र

मतलबः इबादतों में ज़ौक़ व शौक़ हो खूब दिल लगा कर की जाएं ताकि वह क़बूल हों और उनका बदला मिले। दाने से अगर दरख्त उगाना चाहते हैं तो दाने में मग़्ज़ चाहिए बेमग़्ज के दाने से दरख्त न उगेगा।

इब्ने अबी हातिम व गैरा ने हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ि0 से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अनुवादः "जिस शख्स की नमाज़ ने उसको बद अखलाकियों और बुराईयों से न रोका, उसकी नमाज़ गोया नमाज़ ही नहीं है"। (तफ़्सीर इब्ने कसीर सू–रए–अनकबूत)।

बहर हाल नमाज़ की यह तासीर तब ही जाहिर हो सकती है जब कि नमाज़ ग़फ़लत वाली नमाज़ न हो बल्कि सरासर ज़िक्र हो, जिस्म व ज़बान का ज़िक्र हो और दिल का भी जिक्र हो।

अलग़रज अल्लाह व रसूल की इताअत वाली जिन्दगी पैदा करने में नमाज़ की तासीर का एक पहलू तो यह है कि नमाज़ अल्लाह का जिक्र है और इंसान के पूरे जाहिर व बातिन का जिक्र है, और गफ़लत को दिल से हांकता और इताअ़त व बन्दगी का जज़बा पैदा करता है।

नमाज़ रोज़े हिसाब की याद दिहानी भी हैः–

दूसरा पहलू यह है कि नमाज़, रोज़े कियामत और हिसाब किताब की याद दिहानी भी है, क्योंकि नमाज़ में हर रकअ़त में बार बार कहते हैं, अनुवादः "जो मालिक है रोज़े जजा का और कहते हैं हम को सीधा रास्ता दिखा उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इनआम किया उन का रास्ता नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ न उन का रास्ता जो भटक गए" इन अलफ़ाज़ के पढ़ते वक्त अल्लाह के कान में जज़ा और सज़ा और रोज़े हिसाब की याददिहानी भी होती है और जाहिर है कि ग़फ़लत से चौकाने के लिए यह कितनी मुअस्सिर चीज़ है।

अल्लाह की महब्बत व इताअत के जज़बात पैदा करने में नमाज़ का खास हिस्साः–

मजीद बरआं यह कि नमाज़ में अल्लाह तआ़ला की अज़मत व किबरियाई के बार बार तज़्कार और उसकी तस्बीह़ व तहमीद और तक्दीस

व तमजीद की तकरार की जो खास तरतीब रखी गई है और उसी के मुताबिक़ जाहरी आज़ा से जो जो अमल कराये जाते हैं मसलन पहले कियाम, फिर रुकूअ़ और फिर कौमा और फिर सज्दा और फिर जल्सा फिर मुकर्रर सज्दा, सो इन आमाल को जिस तरह एक खास इरतिक़ाई तरतीब के साथ पिरोया गया है, और हर मौक़े और हर हालत के लिए उसके मुनासिब जो खास खास अज़्कार मुकर्रर किए गए हैं वह सब ऐसी चीजें हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला उन चीजों का किसी को कुछ भी इदराक बख्श दे तो वह समझ सकता है कि इन अज़कार के साथ इस खास तरतीब से कियाम कुऊद और रुकूअ़ व सुजूद में अल्लाह की महब्बत और शुक्र व इताअत के जज़बात पैदा करने और कल्ब व जमीर के रुजहानात को दुरुस्त कर के जिन्दगी का रुख सलाह व तक़्वे की तरफ फेर देने का कितना सामान है।

.....जारी.....

अपने बच्चों की फिक्र.....

जाते हैं और उनके मुतअल्लिक़ीन भी दीन से जुड़ जाते हैं और उनकी आखिरत संवरने की उम्मीद हो जाती है।

बहुत दिनों की बात है मैं तब्लीग़ी जमाअ़त की एक पैदल जमाअत के साथ निकला था, एक मौलाना कानपुर से साथ थे वह उस जमाअत के अमीर थे, नाम बिल्कुल याद नहीं रहा, बड़ी अच्छी इस्लाही तक़्कीर करते थे, जिस गांव में जाते पूरा गांव उनकी तकरीर सुनने को उमड़ पड़ता, इस तकरीर के बाद हस्ब मामूल तशकील करते और आखिर में कहते निकलो बड़ा फ़ाइदा होगा और पूरा फ़ायदा निकलने ही में पाओगे लेकिन अगर नही निकल सकते तो अपने को बदलो, गफ़लत की जिन्दगी दूर करो,रोज़ी कमाने के लिए मेहनत मज़दूरी करो मगर साथ में नमाज़ भी पढ़ो, बुरे कामों से बचो दूसरे भाइयों को भले कामों की दावत दो खास तौर से अपने घर वालों पर तवज्जुह दो बीवी नमाज़ नहीं पढ़ती है, तो खुद भी नमाज़ की पाबन्दी करो और बीवी को भी नमाज़ पर लगाओ और अपनी औलाद अपने भाइयों बहनों और अगर मां बाप हैं और वह नमाज़ नहीं पढ़ते हैं तो उनको मिन्नत समाजत से नमाज़ पर लगाओ। दीन में नमाज़ बहुत अहम है, साथ में तमाम बुराईयों से दूर रहो और लोगों को दूर रखने की कोशिश करो अल्लाह तुम्हारी और हमारी मदद करे।

मौलाना की तकरीर का यह किसी हद तक खुलासा है।

मौलाना की इस तकरीर का बड़ा अच्छा असर होता और जिस गांव में जाते वहां एक दीनी इन्किलाब पैदा हो जाता।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः मस्जिद किसको कहते हैं? क्या मस्जिद के लिए इमारत का होना शर्त है? एक साहब का कहना है कि बगैर इमारत के, सहन वगैरह मस्जिद नहीं कहलाएगी क्या खाली जगह जहां बा जमाअ़त नमाज़ होती हो, मस्जिद नहीं कहलाएगी?

उत्तरः मस्जिद ऐसी जगह को कहते हैं, जिसको किसी मुसलमान ने खालिस अल्लाह तआला के लिए फर्ज़ नमाज़ अदा करने के लिए वक़्फ कर दिया हो उस पर इमारत और छत वगैरह होना शर्त नहीं है। अल्लामा तहतावी ने लिखा है किसी जगह को मस्जिद करार देने के लिए इमारत का होना शर्त नहीं है। (तहतावीः 536)

प्रश्नः एक पुरानी मस्जिद गैर मुस्लिम आबादी में है उस आबादी में कोई मुसलमान नहीं है इसलिए मस्जिद गैर आबाद है, मस्जिद की इमारत गिर चुकी है। सिर्फ बाज़ दीवारें खड़ी हैं मस्जिद की उस जगह को गैर मुस्लिम खरीदना चाहते हैं। अगर वो जगह बेची न गई तो गैर मुस्लिम उस पर क़ाबिज़ हो जाएंगे, क्या अगर उस जगह को बेच कर उसके बदले में मुस्लिम आबादी में नई मस्जिद बना ली जाए तो शरीअ़त में इसकी इजाज़त होगी या नहीं?

उत्तरः मस्जिद की जगह चाहे वीरान हो गई हो और चाहे वहां मुस्लिम आबादी हो या न हो वह कियामत तक मस्जिद ही रहेगी, अल्लामा हसकफी ने दुर्रे मुखतार में लिखा है "कि वह जगह कियामत तक मस्जिद ही रहेगी चाहे वीरान हो जाए और उसके इर्द गिर्द आबादी हो या न हो, (दुर्रे मुखतारः 3/513) मुसलमानों की यह जिम्मेदारी है कि उस जगह को आबाद करें पाचों वक्त न पढ़ सकें तो कम से कम जुमे की नमाज़ पढ़ कर उसे आबाद करने की कोशिश करें यह भी मुम्किन न हो तो उसके चारों तरफ दीवार बना दी जाए ताकि गंदगियों और ग़लत इस्तेमाल से हिफाजत हो सके।

प्रश्नः एक मस्जिद बहुत पुरानी है बिल्कुल बोसीदह हो गई है अब वह नये सिरे से बनाई जा रही है कुछ बढ़ा कर बनाई जाएगी, मस्जिद की कमेटी का मशवरा है कि उसका तहखाना बना कर उसमें वुज़ू खाना वगैरा बना दिया जाए, क्या ऐसा करना शरअ़न दुरुस्त है?

उत्तरः जिस जगह पहले से मस्जिद थी उस के नीचे तहखाना बना कर सिर्फ नमाज़ पढ़ी जा सकती है, वुज़ू खाना नहीं बनाया जा सकता है। फुकहा ने लिखा है कि "जिस जगह मस्जिद बन गई अब वह जगह तहतुस्सरा (ज़मीन का निचला हिस्सा) से आसमान तक मस्जिद के हुक्म में है" (अल—बहरुर्राइक़ः 5/249)

अलबत्ता जो जगह बढ़ाई जाए उसके नीचे वुज़ू खाना बनाया जा सकता है, फुकहा ने लिखा है कि "नई

मस्जिद बनाते वक्त मस्जिद के काम की चीजें उस के तहखाने में बना सकते हैं, वुजू खाना मस्जिद की जरूरत की चीजों में से है'' इसलिए बढ़ाई हुई जगह के नीचे वुजू खाना बनाना दुरुस्त होगा।

(दुर्रे मुखतारः 3/512)

प्रश्नः एक शख्स बीमार है पानी के इस्तेमाल से उस को नुक्सान पहुंचता है, उसे इहतिलाम (स्वप्न दोष) हो गया है अब वह नमाज़ कैसे पढ़े? वुजू के बदले में तयम्मुम करना मैं जानता हूं क्या गुस्ल के बदले में भी तयम्मुम किया जा सकता है अगर किया जा सकता है तो उस का क्या तरीक़ा है?

उत्तरः अगर गुस्ल करने में पानी नुकसान करे या पानी न मिले तो गुस्ल के बदले में भी तयम्मुम किया जा सकता है, गुस्ल और वुजू के तयम्मुम में कोई फर्क नहीं है, तयम्मुम में तीन फर्ज हैं–

(1) नीयत करना कि (मैं वुजू या गुस्ल) नापाकी दूर करने के लिए तयम्मुम करता हूं।

(2) दोनों हाथ की हथेलियां पाक मिट्टी पर मार कर पूरे मुंह पर मलना।

(3) फिर दोनों हथेलियां पाक मिट्टी पर मार कर दोनों हाथों पर कुहनियों समेत मलना।

मगर याद रहे कि तयम्मुम से सिर्फ हुक्मी नजासत दूर होती है हक़ीक़ी नजासत दूर नहीं होती लिहाजा जिस बीमार को एहतिलाम हुआ है वह पहले अपने जिस्म और कपड़े से नजासते हक़ीक़ी दूर करे फिर तयम्मुम करके नमाज़ पढ़े।

प्रश्नः हुक्मी नजासत और हक़ीक़ी नजासत किसे कहते हैं?

उत्तरः वह नापाकी जो देखने में न आ सके मगर शरीअत के हुक्म से साबित हो जैसे बे वुजू होना, गुस्ल की हाजत होना नजासते हुक्मीया या हुक्मी नजासत कहलाती है और वह नापाकी जो देखने में आ सके जैसे पाखाना पेशाब वगैरह हक़ीक़ी नजासत कहलाती है।

प्रश्नः तयम्मुम किस मिट्टी पर जाइज है बाज लोग कहते हैं कि चूरा मिट्टी पर तयम्मुम करना चाहिए ताकि उस पर हाथ मारें तो मिट्टी का चूरा हाथ में लग जाए। सही क्या है?

उत्तरः तयम्मुम पाक मिट्टी पर जाइज है चाहे मिट्टी का चूरा हो रेत हो, मोरंग हो या मिट्टी का ढेला हो। मिट्टी का चूरा हाथ में लगना जरूरी नहीं है, मिट्टी के कच्चे पक्के बरतनों, मिट्टी से बनी कच्ची पक्की ईंटों, कच्ची मिट्टी की दीवार, कच्ची ईंट की दीवार, पक्की ईंट की दीवार पर भी तयम्मुम जाइज है, पत्थर, चूना, गेरू, और मुल्तानी मिट्टी भी मिट्टी हैं इन सब पर तयम्मुम जाइज है। अल्बत्ता मिट्टी की जिन चीजों पर ऑयल पेन्ट (रौगनी रंग) हो उस पर तयम्मुम जाइज नहीं।

प्रश्नः जिस दीवार पर सीमेंट का प्लास्टर हो उस पर तयम्मुम जाइज है या नहीं?

उत्तरः सीमेंट पत्थर से बनाई जाती है इसलिए वह मिट्टी के हुक्म में है और इसके प्लास्टर पर तयम्मुम जाइज है अगर उस पर चूनाकारी की गई हो तब भी तयम्मुम जाइज है अल्बत्ता उस पर आयल पेन्ट होगा तो तयम्मुम जाईज न होगा।

प्रश्नः एक शख्स का लड़का बीमार हुआ और उसकी हालत खराब होने लगी तो उसने नज़्र (मन्नत) मानी कि

मेरा लड़का सिहतयाब हो जाएगा तो मैं आशूरा की रात में ताज़िया रखूंगा और आम लोगों को शरबत पिलाऊँगा, लड़का अच्छा हो गया अब वह क्या करे नज़्र पूरे करे या नहीं, बाज लोग उससे कहते हैं कि यह नज़्र पूरी न की जाएगी, सही क्या है?

उत्तर: नज़्र जाइज काम की मानी जाती है, और उसका पूरा करना वाजिब होता है, लेकिन आशूरा की रात ताज़िया रखना तमाम उलमा के नज़दीक नाजाइज़ है और उसके साथ 10 मुहर्रम को शरबत पिलाने का रवाज बिदअत में है इसलिए इस नज़्र का पूरा करना वाजिब नहीं है बल्कि इसको पूरा करना गुनाह का काम है, अलबत्ता उस नज़्र के मानने वाले पर कुछ वाजिब तो नहीं लेकिन अगर वह चाहे तो ताज़िया वाले दिन के अलावा और तीजा चालीस्वां के अलावा किसी दिन अपने बच्चे की सिहतयाबी के शुक्रिये में गरीबों को खाना खिला सकता है और शरबत पिला सकता है। और चाहे तो गरीबों के साथ आम लोगों को भी खिलाए पिलाए।

प्रश्न: एक ताजिया दार सुन्नी मुसलमान ने ताज़ियादारी से तौबा की मगर वह कहता है कि हज़रत हुसैन रज़ि0 की महब्बत और याद में कुछ करने का मेरे दिल में तक़ाजा हो रहा है लिहाजा मुझे हज़रत हुसैन की महब्बत और याद के लिए कोई जाइज़ काम बताया जाय। उसको क्या जवाब देना चाहिए।

उत्तर: हज़रत हुसैन रज़ि0 से महब्बत ईमान की अलामत है और यह ईमान का तकाज़ा है। अल्लाह तआला ने इसका कुछ नज़्म फ़रमा दिया है। हर मुसलमान हर नमाज़ के आखिरी कअ़दे में जो दुरूद पढ़ता है उसमें आले मुहम्मद पर रहमत की दुआ मांगता है वह कहता है ऐ अल्लाह मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फरमां और मुहम्मद की आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हज़रत हुसैन आले मुहम्मद में से हैं, यह उनकी मुहब्बत और याद की ही दुआ है, फिर एक मुसलमान नमाज़ों में जितनी बार अत्तहिय्यात पढ़ता है उसमें अल्लाह के नबी को सलाम करता है और तमाम मुसलमानों को भी सलाम भेजता है, कहता है ऐ अल्लाह हम पर सलामती हो और तमाम नेक बन्दों पर सलामती हो, और हज़रत हुसैन रज़ि0 सालिहीन में से हैं, फिर भी अगर नाम के साथ उनकी याद आये तो अल्लाह तआला से उनके लिए मग़फिरत और बुलन्दीय दरजात की दुआ करे और अल्लाह तौफ़ीक़ दे तो कुछ नेक काम करके जैसे कुर्आन मजीद की तिलावत करके या गरीबों मुहताजों की मदद करके उनको खाना वगैरह दे कर सवाब हासिल करें फिर अल्लाह तआला से दुआ करें कि इस का सवाब हज़रत हुसैन रज़ि0 की रूह को पहुंचा दीजिए, हज़रत हुसैन के अलावा खुलफाए राशिदीन हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली और हज़रत हसन रज़ि0 से महब्बत का भी यही तरीक़ा है लिहाज़ा हज़रत हुसैन रज़ि की महब्बत का तक़ाज़ा भी यही

है कि उनके लिए मगफिरत और रहमत की दुआ मांगे और उन को अपनी नेकियों का सवाब पहुंचाएं।

प्रश्न: जिस दीवार पर पालिश किए हुए चिकने मारबल लगे हुए हों उस पर तयम्मुम जाइज है या नहीं?

उत्तर: जिस दीवार पर पालिश किए हुए चिकने मारबल लगे हुए हों उस पर तयम्मुम दुरुस्त नहीं, मारबल पत्थर हैं उन पर तयम्मुम दुरुस्त है लेकिन पालिश किए हुए मारबल पर हाथ मारने से हाथ पालिश पर लगेगा मारबल पर नहीं इसलिए पालिश किए हुए मारबल पर तयम्मुम दुरुस्त नहीं।

प्रश्न: अगर किसी के पास न चांदी है न सोना मगर साढ़े बावन तोला (612 ग्राम 282 मिली ग्राम) चांदी खरीदने के पैसे हैं वह साहिबे निसाब है या नहीं?

उत्तर: जिसके पास न चांदी है न सोना मगर 612 ग्राम 282 मिली ग्राम चांदी खरीदने के पैसे हैं तो वह साहिबे निसाब है उस के माल पर साल गुजर जाएगा तो ज़कात फर्ज हो जाएगी।

प्रश्न: किसी के पास चांदी बिल्कुल नहीं है मगर चार तोला सोना है और कुछ नक्द पैसे हैं तो वह साहिबे निसाब है या नहीं?

उत्तर: चार तोला सोना की कीमत और नक्द पैसे मिला कर अगर 612 ग्राम 282 मिली ग्राम चांदी खरीदी जा सकती है तो वह साहिबे निसाब है उसके माल पर साल पूरा होने पर ज़कात फर्ज होगी अलबत्ता अगर किसी के पास चांदी बिल्कुल नहीं है और नक्द पैसे भी नहीं है मगर सोना 87 ग्राम 470 मिली ग्राम यानी साढ़े सात तोला से कम है वह साहिबे निसाब नहीं है मगर ऐसा शख्स मुश्किल से मिलेगा।

प्रश्न: सुन्नतें मस्जिद में पढ़नी बेहतर हैं या घर में?

उत्तर: सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ें घर में पढ़ना बेहतर हैं मगर बाज सुन्नत नमाज़ें मस्जिद में पढ़ना बेहतर है जैसे तरावीह की नमाज़, सूरज गरहन की नमाज़ और तहीयतुल मस्जिद तो मस्जिद में पढ़ी ही जाती है, दूसरी सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ें घर में पढ़ना ज़ियादा बेहतर है, मस्जिद में भी पढ़ सकते हैं।

प्रश्न: नफ़्ल नमाज़ें किस किस वक्त पढ़ना मकरूह है?

उत्तर: सुब्हे सादिक़ शुरु होने के बाद से फज्र की फर्ज नमाज़ पढ़ने से पहले तक फज्र की दो सुन्नतों के अलावा नफ़्ल नमाज़ मकरूह है, फज्र की फर्जों के बाद सूरज निकलने से पहले तक नफ़्ल नमाज़ पढ़ना मकरूह है। अस्र के फर्जों के बाद गुरूब आफताब से पहले तक नफ़्ल नमाज़ पढ़ना मकरूह है मगर इन तीनों औक़ात में जनाज़े की नमाज़ और फर्ज नमाज़ों की कज़ा पढ़ी जा सकती है अगर इन औक़ात में तिलावत करते वक़्त सज्दये तिलावत आ जाये तो सजदा कर सकते हैं। सूरज निकलते वक़्त जब तक वह कुछ बुलन्द न हो जाए, इसी तरह ठीक दोपहर (जवाल) के वक़्त और सूरज गुरूब होने के वक़्त हर नमाज़ मकरूह है, सूरज गुरूब होने से पहले जब सूरज की हालत बदल रही हो उस वक़्त भी हर नमाज़ मकरूह है। अल्बत्ता उसी दिन अस्र की नमाज़ न पढ़ी हो तो पढ़ सकते हैं।

❖❖❖

शैक्षणिक व्यवस्था तथा जीवन के उद्देश्य

—हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —हिन्दी इम्लाः उबैदुल्लाह सिद्दीक़ी

क़ौम व मिल्लत की कुछ विशेषतायें होती हैं, उन विशेषताओं की पूर्ति और मिल्लत के युवकों में उन विशेषताओं के अनुकूल योग्यता पैदा करने का काम शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा सम्पन्न होता है। क़ौम व मिल्लत जब इस काम को पूरा करने की ज़िम्मेदारी खुद लेती है और शैक्षणिक केन्द्र (तालीमी मरकिज़) स्थापित करती है तो उसको बड़े चिन्तन से काम लेना पड़ता है और स्वार्थरहित हो कर काम करना पड़ता है। आधुनिकयुग जो पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित है वह हमारी संस्थाओं के लिए एक चुनौती है। पाश्चात्य सभ्यता का धर्मरहित उद्देश्य केवल सांसारिक उद्देश्य अपितु नफसा नफसी का उद्देश्य बन कर रह गयी है जिसका नारा (नाद) रोज़ी, रोटी और मकान बन कर रह गया है, हमारी शैक्षणिक व्यवस्था भी इस पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित है, इस कारण हमारे दीनी संस्थाओं का महत्व बहुत बढ़ गया है और उनका काम अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। अतएव पाश्चात्यवादी हमारी दीनी संस्थाओं को अपना विरोधी समझने लगे हैं और वह हमारी संस्थाओं को दीनी उद्देश्य से बाहर लाने का प्रयास कर रहे हैं जिसका मुक़ाबिला हमारे लिए आवश्यक है ताकि हम मुस्लिम युवकों को पाश्चात्य विकृत विचारों से बचा सकें, विकृत विचारों से मुस्लिम युवकों को बचाना हमारी विशेषता है उम्मत के युवकों को यूरोप के ग़लत रुझानात से बचाने ही में हमारी सफलता है।

अल्लाह तआला ने ज्ञान तथा बुद्धि को मनुष्य की श्रेष्ठता का साधन बनाया है, मनुष्य की श्रेष्ठता दूसरी सृष्टि से ज्ञान और बुद्धि ही से सिद्ध होती है, मनुष्य ज्ञान विज्ञान में कितना ही बढ़ जाये यदि उसको आकाशीय पथ प्रदर्शन प्राप्त न हो तो उसका ज्ञान इसी सांसारिक जीवन के साथ नष्ट हो जाता है, अगले जीवन में कुछ काम नहीं आता।

हमारे दीनी मदारिस की यही जिम्मेदारी होती है कि वह मनुष्य को ऐसा ज्ञान दें जो अगले जीवन में भी काम आए और इस जीवन में भी शान्ति प्रदान करे, अतः हमारे दीनी मदारिस की जिम्मेदारी यह है कि वह क़ौम के युवकों को सदाचारी बनायें ताकि उनको अगले जीवन में उच्चता प्राप्त हो सके, इस समय जो परिस्थिति है वह पाश्चात्य विचार और दीनी विचार के बीच टकराव की है।

इस सिलसिले में इस्लामिक निर्देश यह है कि पाश्चात्य के नवीन विचारों में जो शुद्ध तत्व हैं उनको ले लें और अशुद्ध तत्व को छोड़ दें और इस्लामी शिक्षाओं को

पूरी तरह अपनाएं इस तरह दोनों में मेल पैदा करके मुस्लिम युवकों को शुद्ध मार्ग दर्शायें यद्यपि आधुनिक शिक्षा प्रणाली पाश्चात्य विचारों से ऐसी प्रभावित है कि उसमें मरने के पश्चात आने वाले जीवन को पीठ पीछे डाल दिया है। फिर भी आधुनिक ज्ञान विज्ञान में आश्चर्यजनक उन्नति की है और इसमें सांसारिक जीवन को सुखी बनाने का बहुत ही अच्छा प्रबन्ध है।

हमारे दीनी मदारिस के उद्देश्य में आधुनिक लाभदायक ज्ञान को ग्रहण करना है और आकाशीय ज्ञान अर्थात दीनी ज्ञान के अनिवार्य तत्व को पूरी तरह अपनाना है लेकिन साधनों की कमी के कारण इन दोनों को अभी तक भली भांति जमा नहीं किया जा सका। अलबत्ता दीनी उलूम की मौलिक बातों को पाश्चात्य विकृत विचारों से सुरक्षित रखने के लिए दीनी उलूम के मदारिस केवल दीनी उलूम पर ध्यान दे रहे हैं। अतः उम्मत को चाहिए कि अपने दीनी मदारिस की बक़ा के लिए हर तरह की कोशिश जारी रखें। ताकि उम्मत के नवयुवकों में दीन बाक़ी रहे, अगर इसमें कोताही की गई तो उम्मत की आने वाली पीढ़ी में दीन के लिए खतरा पैदा हो जाएगा।

इस वक्त हमारे दीनी मदारिस का निसाबे तालीम (पाठय क्रम) विद्यमान परिस्थिति में अपने उद्देश्य के अनुकूल बहुत ही महत्व रखता है, इसलिए कि इस्लाम का जो जीवन संविधान है उसका सम्बन्ध केवल सांसारिक जीवन में सीमित नहीं है। उसका सम्बन्ध मौत के बाद वाले जीवन से जुड़ा हुआ है। मौत के बाद के जीवन जिसको आख़िरत कहते हैं अगर किसी को उस पर विश्वास नहीं है तो वह इस्लामी आदेशों के विषय में जो चाहे कह सकता है। लेकिन जिसको आखिरत की जिन्दगी पर यक़ीन है और हर मुसलमान के लिए यह यक़ीन अनिवार्य है। इसके बिना वह मुसलमान नहीं रह सकता, लिहाजा हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है कि उस ज्ञान को पूरी तरह प्राप्त करे जिसके द्वारा उसको . अगले जीवन में सफलता प्राप्त हो। और यह ज्ञान कुर्आन, हदीस सीरत, और फिक़्ह के विद्वानों ही से मिल सकता है। अतः आवश्यक है कि इन दीनी विषयों के विद्वान पर्याप्त संख्या में मौजूद रहें ताकि उम्मत कि यह जरूरत पूरी होती रहे। और जिस प्रकार सांसारिक ज्ञान के विषयों में अलग–अलग विशेषज्ञों की जरूरत पड़ती है जैसे मेडिकल का विशेषज्ञ, इंजीनियरिंग का विशेषज्ञ, विज्ञान का विशेषज्ञ आदि उसी प्रकार दीनी उलूम के विशेषज्ञों की जरूरत रहती है जैसे कुर्आन पाठन (तजवीद से कुर्आन पढ़ना) के विशेषज्ञ, कुर्आन के अर्थ के विशेषज्ञ, हदीस के विशेषज्ञ तथा फिक़्ह के विशेषज्ञ आदि। ताकि वह आम मुसलमानों की ज़िन्दगी के हर विभाग में पथ प्रदर्शन (रहनुमाई) कर सकें।

शेष पृष्ठ....34 पर

सर्जनों की शीघ्रता की कहानी दादा जी की ज़ुबानी

—अब्दुल मन्नान

दादा जी ने सुनाया कि.....

1982 ई0 में मैं रियाज़ में था यद्यपि मैं लखनऊ यूनीवर्सिटी से उर्दू में पीएचडी किए हुए था फिर भी किंग सऊद यूनीवर्सिटी रियाज़ (सऊदी अरब) में दूसरा एम0ए0 कर रहा था, गर्मी का मौसम था, एक दिन दोपहर में वहां की सख्त धूप खाते हुए बोर्डिंग पहुंचा प्यास लगी हुई थी, आइस–क्रीम की गाड़ी खड़ी थी, लोग स्वादिष्ट आइस–क्रीम का आनन्द ले रहे थे, मैंने भी अच्छी वाली आइस–क्रीम ली और खाई बड़ा मज़ा आया, कमरे चला गया, थोड़ी देर के बाद लगा कि गले के अंदर कोई चीज़ चिपकी हुई है, गला साफ करने की बार बार कोशिश की मगर गला साफ न हुआ, रात को गुन गुने नमक पानी से गरारा किया मगर कोई फाइदा न हुआ, सुबह को बोर्डिंग के डॉक्टर के पास गया दो दिन उसकी दवा खाई, मगर फाइदा न हुआ, कोई दर्द न था, कोई खास तकलीफ न थी मगर खराब खराब लगता था बार बार गला साफ करना पड़ता था आखिर कार बड़े हास्पिटल गया वहां एक सऊदी डॉक्टर लन्दन से पढ़ कर नया नया सर्जन बन कर आया था उसको दिखाया उसने कई तरह से चेक करने के बाद गले का आप्रेशन लिख दिया, बेड भी एलाट कर दी, आप्रेशन की तारीख भी मुकर्रर कर दी, मैं इजाज़त ले कर कमरे आ गया साथियों से बताया, साथियों ने कहा किसी हिन्दोस्तानी या पाकिस्तानी डॉक्टर से मशवरा ले कर ही आप्रेशन कराओ। बोर्डिंग के डॉक्टरों में हैद्राबाद के एक हिन्दुस्तानी डॉक्टर थे बड़े अच्छे स्वभाव के थे उनके पास जा कर अपना हाल बताया और सऊदी डॉक्टर का फैसला सुनाया, हैद्राबादी डॉक्टर ने कहा गले का आप्रेशन सरल नहीं होता है, आप आप्रेशन के लिए हरगिज़ न जाइयेगा वरना वह नया नया सऊदी सर्जन आपके गले में न जाने क्या काट डालेगा। मैं एक स्प्रे लिखता हूं, रोज़ाना सुबह शाम स्प्रे करना थोड़े दिनों में ठीक हो जायेंगे, फिर मैं एक पाकिस्तानी डॉक्टर के पास गया और उनको भी पूरी बात बताई, उन्होंने भी मुझ को आप्रेशन से सख़्ती से रोका। और कहा हैद्राबादी डॉक्टर ने जो स्प्रे लिखा है उसको इस्तेमाल करें उससे आप ठीक हो जाऐंगे मैंने अब दोनों की बात मान ली और आप्रेशन के लिए नहीं गया। हैद्राबादी डॉक्टर का स्प्रे इस्तेमाल करना शुरु कर दिया, दो हफ्तों में मेरा गला ठीक हो गया इस तरह मैं गले के खतरनाक आप्रेशन से बच गया इस पर अल्लाह का शुक्र अदा किया।

दादा ने इसी तरह का एक और वाकिया इस तरह बयान किया कि.....

शायद 1990 ई0 की बात है जब मैं माहद दारुल उलूम नदवतुल उलमा का हेडमास्टर था और दारुल उलूम के परिसर ही में फैमिली के साथ क़ियाम था। अल्लाह की मर्जी एक रात मेरी रियाह रुक गयी, सुब्ह तक न रियाह पास हुई न लेटरीन हुई, फ़ज्र की नमाज़ के बाद मैं सहर नर्सिंग होम चला गया, वहां मुझे एनीमा लगाया गया, थोड़ी देर के बाद लेटरीन गया तो एनीमा की दवा बाहर हो गयी मगर न रियाह पास हुई न लेटरीन हुई, नर्सिंग होम के मालिक डॉ0 ग़ौस ने और उपाय किये मगर कोई लाभ न हुआ। डॉ0 ग़ौस साहिब ने प्रसिद्ध सर्जन डॉ0 गुफरान साहिब को बुलाया उन्होंने कई तरह की जाचें करवाईं, आखिर में आप्रेशन का फैसला किया, पेट के खतरनाक आप्रेशन की खबर सुन कर नदवे के तलबा बाज़ असातिज़ा और बाज़ बड़े भी मुझे देखने आए, जनाब मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी प्रिंसिपल दारुल उलूम भी देखने आये, मौलाना ने आप्रेशन का सख़्त विरोध किया, जनाब डॉ0 इश्तियाक़ हुसैन कुरैशी साहिब को मालूम हुआ तो उन्होंने अपने बेटे डॉ0 शुऐब कुरैशी को एक दवा दे कर भेजा और कहलाया कि आप्रेशन नहीं होना चाहिए, मुकारिम नगर के डॉ0 अनवार साहिब भी मुझे देखने गये और चुपके से एक दवा खिला आए और आप्रेशन का विरोध किया। मेरे मुंह में नलकी पड़ी हुई थी अन्दर की गंदगी नलकी द्वारा बाहर निकल रही थी मैं बोल नहीं पा रहा था मगर मेरी समझ में यह आ रहा था कि अगर डॉ0 के निकट आप्रेशन ही इलाज है तो आप्रेशन होना चाहिए, ओ0टी0 का पूरा सामान आ चुका था कुछ घण्टों बाद आप्रेशन होना था कि मैं पेशाब करने लेटरीन गया वहां मुझे खुल कर लेटरीन हो गयी बाहर आ कर बताया तो आप्रेशन कैंसिल हुआ मुंह से नलकी निकाली गयी दवाएं वापस की गईं डिस्चार्ज हो कर घर आ गया। अल्लाह का शुक्र अदा किया। मुझे बताया गया कि ये खबर सुन कर डॉ0 इश्तियाक़ साहिब ने फरमाया "एलोपैथ डॉक्टर भी अजीब होते हैं, कि जो काम चार आने के चूरन से हो सकता है वह उसे हजारों के आप्रेशन से करते हैं।"

❖❖❖

शैक्षणिक व्यवस्था तथा.....

हमारे बड़े मदारिस इसी कार्य को पूरा करते हैं और दीनी उलूम के अलग अलग विशेषज्ञ तैयार करते हैं, अतः इन मदारिस का महत्व समझना और उन का ख़्याल रखना और उनको बाक़ी रखना उम्मत की ज़िम्मेदारी है। दीनी उलूम के साथ दुन्यावी उलूम (सांसारिक ज्ञान) में आवश्यकतानुसार उनमें महारत (निपुणता) पैदा करना आवश्यक है, हमारी दीनी ज़रूरत के लिए गुंजाइश के अनुकूल हमारे बड़े मदारिस इस काम को अंजाम भी दे रहे हैं।

(तामीरे हयात 10 जुलाई 2017 से ग्रहीत)

❖❖❖

—देवनागरी लिपि में उर्दू

इस्लाम का मेयारे फ़ज़ीलत

(इस्लाम में श्रेष्ठता का मापदण्ड)

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

तारीख के हर दौर में इन्सानी फज़ीलत के मेयार पाये गये कभी माल व दौलत को फ़ज़ीलत का मेयार करार दिया गया तो कभी जाह व मन्सब को तो कभी कूवत व ताक़त को तो कहीं हसब व नसब तो कहीं हुस्न व जमाल को मसलहत और वक़्त के तकाज़े के मुताबिक इन में से हर शै एक मुस्तकिल मेयार की हैसीयत पाती रही बादशाह को सारी रिआया पर इस लिए अफ़जल क़रार दिया गया कि वह अपने महदूद इलाक़े में एक महदूद वक़्त तक के लिए जाह व मनसब का आखरी मालिक है इसी तरह मालदार और साहिबे सरवत को गरीब लोगों के मुकाबिल में इस लिए अफ़ज़ल समझा गया कि वह एक बड़ी दौलत का तने तनहा मालिक है, किसी शख्स को इसलिए इज्जत की निगाह से देखा गया कि वह एक बड़े कबीले और ऊँचे खानदान का चश्म व चराग है, गरज फ़ज़ीलत का मुख्तलिफ मेयार ज़मान व मकान और वक़्त व मसलहत के तक़ाज़ों के साथ बदलता रहा और अफ़ज़ल व गैर अफ़ज़ल की तक्सीम का सिलसिला बराबर काइम रहा।

इस्लाम से पहले तबक़ाती कशमकश और क़बाइली ऊँच नीच का दौर दौरा था, इन्सानों का एक तबक़ा गुलाम था, तो दूसरा आक़ा, गुलाम तबका हर उस शरफ़ से महरूम समझा जाता था जो आक़ा अपने लिए मख्सूस कर लेता, इस तरह रंग व नस्ल और हसब व नसब, और जाह व मनसब, बुलन्दी और पस्ती, ख़ादमीयत और मख़्दूमीयत, इज़्ज़त व ज़िल्लत के मेयार की यह वह बुन्यादें थीं जिन पर पूरा मुआशरा काइम था, और सिर्फ़ यही नहीं कि अपनी दानिस्त में ऊँचा तबक़ा, "नीचे तबक़े" को सिर्फ पस्त और जलील समझ कर मुआफ़ कर देता, बल्कि वह इस को तरह तरह से जलील करने और आर दिलाने की हर मुम्किन कोशिश करता, अपनी बुलन्दी और अफ़ज़लीयत के कसीदे पढ़ता, और अपने हरीफ के मुकाबिल में पस्ती व जिल्लत के बेशुमार पहलू निकालता, और उसको रुस्वा करने में कोई कसर उठा न रखता।

बुलन्दी व पस्ती का यह तसव्वुर अस्ल उस जाबिराना अजमी निजामें हुकूमत की पैदावार है जिसमें बादशाह या हाकिमे वक्त और उसके चन्द खास लोगों के अलावा बक़ीया सारी रिआया एक जलील ख़ादिम से ज़ियादा की हैसीयत नहीं रखती थी, उन की ज़िन्दगी जानवरों की ज़िन्दगी से किसी तरह मुख्तलिफ नहीं थी और न उससे ज़ियादा किसी बरतरी का उनको मुस्तहिक समझा जाता था, क़ैसर व किसरा

की हुकूमतें (जो अपने जमाने में पूरे कु–र्रए–अर्ज़ पर छाई हुई थीं) का मुताअ़ला करने से साफ जाहिर होता है कि उनके नजदीक रिआ़या और ख़िदमत करने वाले जानवरों का एक ही दर्जा था, उनके साथ वही सुलूक रखा जाता था जो घोड़े, गधे, गाय, बैल के साथ सोसाइटी में न उन का कोई मकाम था और न सलतनत में उनकी कोई आवाज़।

उस वक़्त दुन्या की तमाम क़ौमों का यही हाल था, ताक़तवर, कमज़ोर को ज़लील समझता, मालदार गरीब को और आक़ा गुलाम को जलील समझता, फ़ज़ीलत का मेयार ही ताक़त, दौलत, और वजाहत में मुनहसिर हो कर रह गया था, जो शख्स इन चीज़ों से महरूम होता ख्वाह वह जाती तौर पर कितना ही बुलन्द अख़्लाक़, पाकबाज़ क्यों न होता उसे ज़लील ही समझा जाता, और सोसाइटी में उस को कोई मकाम न मिलता, लेकिन इस्लाम ने उन तमाम मेयारों को जाहिलाना और ग़लत करार दिया, इस्लाम ने बताया कि इन्सान बहैसीयते इंसान तमाम मख्लूक़ात से अफ़जल है और इस अफ़ज़लीयत में किसी को किसी पर कोई तरजीह या बुलन्दी नहीं हासिल है, उसने एलान किया कि हर इंसान आदम अलै0 की औलाद है, आदम अलै0 को अल्लाह तआला ने मिट्टी से पैदा किया था, इसलिए हर शख्स इस मेयार को सामने रखे और समझ ले कि औलादे आदम की हैसीयत से बुलन्द व पस्त, अज़ीज़ व ज़लील, खादिम व मख्दूम की तक्सीम बिल्कुल ग़लत और इन्तिहाई अहमकाना है, हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस हक़ीक़त की तरफ कितने बलीग़ उस्लूब में इशारा फरमाया है।

अनुवादः "किसी अरबी को अज़मी पर या अ़जमी को अ़रबी पर और गोरे को काले पर और काले को गोरे पर कोई फ़ज़ीलत नहीं हासिल है मगर तक़्वा से, तुम में से हर शख्स आदम की औलाद है और आदम मिट्टी से पैदा किये गये"।

बात किस कदर वाज़ेह हो गई कि इस्लाम में ऊँच नीच और बुलन्दी व पस्ती का कोई तसव्वुर नहीं पाया जाता, न क़ौम व वतन से कोई बुलन्द व पस्त होता है और न रंग व नस्ल से कोई ऊँचा नीचा करार दिया जा सकता है, बल्कि इंसान होने की हैसीयत से सब एक ही बाप की औलाद हैं, उनमें से किसी किस्म की तफ़रीक़ करना, और किसी तरह का कोई अदना इम्तियाज़ बरतना एक बाप की औलाद के साथ गैर मुन्सिफाना सुलूक करने के मुरादिफ है लेकिन इस्लाम अफज़लीयत और बुलन्दी का ऐसा मेयार पेश करता है, जो इन्सानी मिज़ाज से पूरी तरह हम आहंग है, और जिस के सामने रंग व नस्ल, क़ौम व वतन और हर तरह की खुद साख्ता तफरीक़ व तक़्सीम मिट जाती है और उस का कोई वज़्न नहीं बाक़ी रहता।

इस्लाम में फ़ज़ीलत का मेयार सिर्फ तक़्वा है, या ब अल्फाजे दीगर जो शख्स

खुदा का सबसे जियादा लिहाज करने वाला होगा, वही सब से जियादा अफज़ल करार पाएगा, ख्वाह वह गुलाम हो या आक़ा, खादिम हो या मख्दूम, बादशाह हो या रईयत, काला हो या गोरा, अरबी हो या अजमी, यहां रंग व खून, नस्ल व क़ौम की तक़्सीम एक अहमक़ाना तसव्वुर है, जिस की कोई अस्ल नहीं, यह ऐसा जाहली नारा है जिससे इस्लाम का किसी दर्जे में कोई तअल्लुक़ नहीं, इस्लाम बिला शुब्हा कबीलों और खान्दानों की तक्सीम का काइल है, लेकिन महज तआरुफ की हद तक, अगर कोई इसको बुलन्दी व पस्ती का ज़रीआ समझता है, या इस्लाम में इससे ऊँच नींच की तफ़रीक़ का जवाज़ निकालता है तो वह इस्लाम पर इफ्तिरा परदाज़ी और बुहतान तराशी के जुर्म का मुरतकिब होता है, वह इस्लाम की खिदमत नहीं बल्कि उसकी जड़ खोखली करता है, कुर्आन का साफ–साफ एलान है।

अनुवादः "ऐ लोगो! बेशक हम ने पैदा किया है तुम को एक मर्द से और एक औरत से और बनाया हम ने तुम को कुंबे और कबीले, ताकि एक दूसरे को पहचानों, बेशक तुम में सबसे जियादा अल्लाह से डरने वाला अल्लाह के नज़दीक सब से ज़ियादा मुअज़्ज़ज़ है"।

(अल–हुजुरातः 13)

कुर्आन का यह एलाने बरहक किसी महदूद वक़्त या क़ौम के लिए नहीं है, बल्कि इस की मुखातब कियामत तक के लिए पूरी नौए इंसानी है उसके अलावा करामत व फ़ज़ीलत की कोई और मीज़ान नहीं है और अगर है तो बिला शुब्हा वह अहमकाना और जाहिलाना है, जिससे इस्लाम और मुसलमानों का कोई तअल्लुक नहीं है, एक हदीस में वारिद है कि सहा–बए–किराम ने हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया कि "लोगों में सबसे मुअज़्ज़ज़ और बुलन्द कौन है?" हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फौरन इरशाद फरमाया "जो तुम में से सबसे ज़ियादा अल्लाह से डरने वाला हो", सहा–बए–किराम ने अर्ज़ किया कि हुजूर हम यह बात नहीं पूछ रहे हैं, आपने फरमाया कि सबसे मुअज़्ज़ज़ युसुफ अलै0 हैं जो अल्लाह के नबी थे, और अल्लाह के नबी के बेटे और नबी के पोते और खलीलुल्लाह की औलाद में से थे, सहा–बए–किराम ने कहा कि हुजूर हम यह भी नहीं पूछ रहे हैं, तो आप ने फरमाया कि अरब के कबाइल के बारे में तुम दरयाफ़्त कर रहे हो? तो सुन लो कि दौरे जाहिलीयत के मुअज़्ज़ज़ लोगा इस्लाम में भी मुअज़्ज़ज़ समझे जाएंगे बशर्ते कि उन्होंने दीन को खूब समझ लिया हो।

गौर फरमाइये कि यहां भी इज्जत व बुलन्दी का मेयार दीन की समझ और खौफ़े खुदा ही बताया जा रहा है, वरना क्या यह मुम्किन न था कि आप अरब क़बाइल के बड़े लोगों को

जो इस्लाम क़बूल कर चुके थे, महज इसलिए मुअ़ज़्ज़ज़ करार देते कि लोग, खान्दानी एतिबार से बुलन्द हैं, इस्लाम का यही तसव्वुरे फज़ीलत व करामत था जिस ने गुलामों और आकाओं को, अरब और अज़म को, काले और गोरे को एक सफ में खड़ा कर के दुन्या के सामने वहदत व इत्तिहाद का वह नमूना पेश किया जिस को दुन्या के बड़े बड़े उक़ला व हुकमा सोच भी नहीं सकते थे।

उन्नीस्वीं सदी ईस्वी में जब यूरोप ने इस्लाम पर हमला शुरुअ़ किया, और इस्लामी तालीमात को गलत करार देने का मन्सूबा बनाया, तो इस्लाम की मुखालफत में वहां रंग़ व नस्ल और क़ौम व वतन की तक्सीम का सिलसिला शुरुअ़ हुआ और गुलाम व आक़ा की तफरीक़ ने जोर पकड़ा चुनांचे रंग व नस्ल के इम्तियाज का रुझहान एक मुसीबत की शक्ल में लोगों पर मुसल्लत हो गया, और हर शख्स अपने आप को ऊँची नस्ल और दूसरे को पस्त तबके का फर्द साबित करने की कोशिश में लग गया, इसी के नतीजे में साम्राज़ी जेहनीयत का वजूद हुआ, और वह पूरी दुन्या पर एक अजाब बन कर मुसल्लत होने लगी, यूरोप अपने आप को आक़ा समझ कर तमाम क़ौमों पर इक्तिदारे आला हासिल करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर सर्फ करने लगा बीसवीं सदी में यह कोशिश इस कदर आगे बढ़ी की आखिरकार दुन्या में अज़ीम जंगें बरपा हो कर रहीं, और करोड़ों अफराद मौत के घाट उतार दिए गये।

फ़ज़ीलत और बरतरी का जो मेयार इस्लाम़ ने पेश किया है उस के सिवा जिस मेयार को भी हम अपनाएंगे या सही समझेंगे वह बिल्कुल ग़लत होगा और उसका नतीजा कशमकश, मसाइब परेशानियों और जंग व जिदाल की शक्ल में रूनुमा हो कर रहेगा, दुन्या में मौजूदा कशमकश और जंग के खतरात का जो तसव्वुर काइम है उसकी सब से बड़ी वजह अगर ग़ौर किया जाये तो सिर्फ इज्जत व वकार का ग़लत मेयार है जिसको हर फरीक़ ने अपनी महदूद अ़क़्ल की बुन्याद पर काइम कर रखा है, इ़ज़्ज़त व वक़ार के इस गलत मेयार को जब तक खत्म न किया जाए और सही मेयार को सामने रखा न जाए, जंग की मुसीबतें और खतरात कतअ़न दूर नहीं हो सकते, दुन्या की दोनों गुज़िश्ता बड़ी जंगों में हमारे लिए इबरत का सामान मौजूद है।

शेष पृष्ठ....41 पर

अपनी मिल्लत पर कयास अक्वामें मग़रिब से न कर
खास है तरकीब में कौमें रसूले हाशिमी
उन की जमईयत का है मुल्क व नसब पर इन्हिसार
कुवते मजहब से मुसतहकम है जमईयत तेरी
दामने दीं हाथ से छूटा तो जमईयत कहां
और जमईयत हुई रुख्सत तो मिल्लत भी गई।

समय का विनाश, व्यक्तिगत तथा सामूहिक अवलोकन

—जावेद अखतर नदवी

हानि का आभासः-

अगर आप से पूछा जाए कि क्या एक साल के 8760 घण्टों को आपने कहां कहां खर्च किया है तो संभव है कि आप उसमें से 70 प्रतिशत का हिसाब बता देंगे जैसे कार्यालय के कार्य, आने जाने का समय, निद्रा आदि, बाकी घण्टों के हिसाब के लिए आप को अपने मस्तिष्क पर जोर देना होगा, लेकिन अगर आप से पूछा जाए इस वर्ष के कुल घण्टों में से आप ने कितना समय उद्देश्य युक्त कामों में लगाया और कितना समय उद्देश्य रहित तथा व्यर्थ कामों में खर्च किया तो इसका उत्तर निश्चय ही कठिन होगा।

इसका कारणः-

• पहली बात तो यह है कि हम ने अपना उद्देश्य नियुक्त नहीं किया।

• दूसरी बात यह है कि अपने नियुक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्य प्रणाली नियुक्त नहीं की।

• तीसरी बात यह कि अपने नियुक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संकल्प नहीं किया।

• चौथी बात यह कि नियुक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ध्यानपूर्वक योजना नहीं बनाई।

• पाँचवीं बात यह कि इस सिलसिले में न तो हम ने समय निर्धारित किया न इस ओर ध्यान दिया कि उस उद्देश्य की प्राप्ति में कितना समय ठीक से लगाया और कितना समय नष्ट किया।

गंतव्य रहित यात्राः-

हम अपने जीवन में इसी प्रकार हर दिन के चौबीस घण्टे गुजार रहे हैं बिना गंतब्य (मंजिल) के हम यात्रीहैं कि चले जा रहे हैं, जहां कहीं तमाशा नज़र आया देखने को खड़े हो गए और तालियां बजाने में मग्न हो गए हम बीते हुए समय का आभास नहीं रखते न आने वाले समय के लिए योजना बनाते हैं और ना ही

—हिन्दी इम्ला हुसैन अहमद

हमारा कोई ऐक्शन प्लान होता है ऐसी परिस्थिति में हम व्यक्तिगत रूप में कुछ नहीं कर सकते और न अपने को और न अपने परिवार को कोई लाभ पहुंचा सकते हैं और न ही इस परिस्थिति में अपनी क़ौम और अपने राष्ट्र के लिए कुछ कर सकेंगे जिसका परिणाम यह होगा कि हम देश की आर्थिक दशा में तथा उत्पादन में कोई सुधार या वृद्धि न कर सकेंगे।

समय तथा धनः-

समय और धन में जो अंतर है उसकी उपमा ऐसी ही है जैसे एक ही साइज़ की दो टंकियां पानी से भरी हुई हों, एक टंकी में टोंटी लगी हो आप उसे आवश्यकतानुसार खोल सकते हैं और जब चाहें बन्द कर सकते हैं, जब कि दूसरी टंकी में टोंटी नहीं है, मगर पेंदे में एक सूराख है आप उस सूराख को बन्द भी नहीं कर सकते, दोनों टंकियां आप को इस्तेमाल करने के लिए दे दी जाएं

आप किसी इरादे के बगैर दूसरी टंकी के पानी को काम में लाने की कोशिश करेंगे जब कि पहली टंकी की टोंटी बन्द कर देंगे।

धन पहली टंकी की तरह है जब कि समय दूसरी टंकी की तरह है, जिस प्रकार दूसरी टंकी से पानी बह रहा है और उसे रोकना हमारे वश में नहीं है, उसी तरह यह समय भी लगातार बीत रहा है, हर व्यक्ति को एक दिन मरना है, हर व्यक्ति मौत का यात्री है अतः मौत के यात्रियों के लिए आवश्यक है कि वह अपने इस दूसरी टंकी के पानी को अच्छे ढंग से काम में लाएं अर्थात समय का विनाश न होने दें, दूसरी टंकी में कितना पानी है अर्थात इस जीवन के लिए कितना समय नियुक्त है उसे किसी आधुनिक यंत्र से भी नहीं जाना जा सकता है।

हम अपना समय कहां नष्ट कर रहे हैं:-

अगर हम चाहते हैं कि यह जानें कि व्यक्तिगत रूप में हमारा समय कहां नष्ट हो रहा है तो सब से पहले अपने व्यक्तित्व का अवलोकन करना होगा हम को देखना होगा कि हम अपनी आजीविका की प्राप्ति में कितना समय लगा रहे हैं और कितना वक्त उत्पादन में लग रहा है और कितना समय दूसरे व्यर्थ कामों में नष्ट हो रहा है एवं हम देखें कि सामाजिक आवश्यकताओं पर हम कितना समय लगा रहे हैं, और कितना समय घर की आवश्यताओं पर।

व्यक्तिगत व्यवहार का अवलोकन:-

इस सिलसिले में हम को अपनी आदतों, कमियों तथा व्यवहार में देखना चाहिए कि हमारा समय कहां व्यर्थ जा रहा है।

उद्देश्य का निर्धारण और उसके लिए योजना:-

अगर हम ने उद्देश्य निर्धारित नहीं किया या उद्देश्य का निर्धारण किया परन्तु उस के लिए योजना नहीं बनाई तो समय तो बीतता ही जाएगा और हम वहीं के वहीं खड़े रहेंगे।

जीवन की प्राथमिकताओं का निर्धारण:-

क्या हम ने अपने जीवन की प्राथमिकताओं का निर्धारण कर लिया है, उद्देश्य के निर्धारण के पश्चात महत्वपूर्ण कार्य यह है कि अभीष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के साधनों की ओर ध्यान दें और उसके लिए उचित योजनाएं बनाएं और योजनाएं बनाते समय बड़ी सावधानी से देखें कि किन किन तरीकों से हम अपने मकासिद आसानी से प्राप्त कर सकते हैं अगर हम सावधानी से योजनाएं बनाएंगे तो समय के विनाश से बच जाएंगे

हम अपने स्वभाव का अवलोकन करें और देखें कि कहां कहां हम अपना समय नष्ट कर रहे हैं जैसे प्रातः काल में नींद खुलने के पश्चात उठने में देर लगना फ़ज्र की नमाज़ के बाद सो जाना, मित्रों के साथ घण्टों खुश गप्पियों में व्यस्त रहना, फोन पर व्यर्थ बातों में लम्बा समय लगाना घर और आफिस में बेतुकेपन से चीजें रख देना और फिर जरूरत

पर उनके ढूंढ़ने में हंगामा मचाना और वक्त खराब करना आदि।

कामों की सूचीः-

हम को चाहिए कि हम अपने कामों की सूची बना रखें हम लिख रखें कि सुब्ह को आफिस जाने से पहले हम को किस वक्त और क्या काम करना है फिर आफिस में कामों की भी सूची बना रखें अगर ऐसा न किया तो सुब्ह के वक्त घर में चीख पुकार और हंगामें में वक्त नष्ट होगा और आफिस का काम भी प्रभावित होगा। यह वह आदतें हैं जो हम से सुधार की मांग करती हैं जब तक हम इन व्यर्थ आदतों को न छोड़ेंगे अपने समय को नष्ट होने से न बचा सकेंगे।

अनुशासन रहित व्यक्तित्वः-

व्यक्तित्व का अनुशासित न होना भी व्यवहार में उलझाव तथा निर्णय में देरी का कारण बनता है निश्चय ही अनुशासन रहित व्यक्तित्व के सबब व्यक्तिगत तथा सामूहिक कार्यों में समय का विनाश होता है।

तात्कालिक प्रतिक्रियाः-

जीवन के विभिन्न व्यवहारों में हम जो कुछ अपने तौर पर समझते हैं उस की तात्कालिक प्रतिक्रिया कर देते हैं जब कि हमें उस व्यवहार में कहने वाले के अर्थ को समझने पर ध्यान देना चाहिए इसी तात्कालिक प्रतिक्रिया तथा विरोधी के कथन को सहन न करने के कारण भ्रान्तियां मतभेद पैदा होते हैं जिसके कारण भी समय नष्ट होता है।

टीम वर्कः-

अगर आप किसी पद पर हैं परस्पर मिल कर काम नहीं करते हैं तो इससे भी समय का विनाश होता है अपितु टीम वर्क का न होना जीवन में असफलता का कारण बनता है, यदि आप उद्धत तथा स्वेच्छाचारी (खुदसर और खुदपसन्द) बोधन प्रबोधन *(Understanding)* से काम नहीं कर सकते तो इससे भी समय नष्ट होगा और बहुत जल्द आप अपने पद से गिरा दिए जाएंगे या आप स्वयं अपना पद छोड़ने पर विवश होंगे।

❖❖❖

इस्लाम का मेयारे फजीलत...

कठिन शब्दों के अर्थः-

फ़ज़ीलत= श्रेष्ठता, मेयार (मेअ़यार)= मापदण्ड, जाह= पद, मनसब= पद, हसब व नसब= कुल, परिवार, अफ़ज़ल= सर्वश्रेष्ठ, साहिबे सरवत= धनवान, तबकाती कशमकश= श्रैणिक तनाव, शरफ़= श्रेष्ठता, महरूम= वंचित, अफ़ज़लीयत= श्रेष्ठता, कु–र्रए–अर्ज= ज़मीन का गोला अर्थात पृथ्वी, वजाहत= तेज, मर्यादा, मुनहसिर= निर्भर, बलीग= सारगर्भित, उस्लूब= शैली, अरबी= अरब निवासी, अज़मी= जो अरबी न हों, ईरानी, तफ़रीक़= भेद भाव, अंतर। हम आहंग= सहमत, खुद साख्ता= स्वरचित, इफ्तिरा परदाज़ी= मिथ्यारोपण बुहतान तराशी= झूठ गढ़ना, मुरतकिब= कर्ता, नौए इंसानी= इंसानी क़ौम, उक़ला= बुद्धिमान लोग, हुकमा= दार्शनिक जन, मुसल्लत= छा जाना, इक्तिदार= सत्ता, आला= उच्चतर, जमईयत= संघ, मिल्लत= मुस्लिम समुदाय।

(तामीरे हयात 10 जुलाई 2017 से ग्रहीत)

❖❖❖

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढये।

मुसलमान सिर्फ अल्लाह को माबूद और मसजूद मानता है

مسلمان صرف اللہ کو معبود اور مسجود مانتا ہے۔

मुसलमान हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को अल्लाह का आख़री रसूल और आखिरी नबीमानता है

مسلمان حضرت محمدؐ کو اللہ کا آخری رسول اور آخری نبی مانتا ہے۔

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर अल्लाह की रहमत हो और अल्लाह का सलाम हो

حضرت محمدؐ پر اللہ کی رحمت ہو اور اللہ کا سلام ہو۔

मुसलमान अपने मुल्क व वतन से महब्बत करता है

مسلمان اپنے ملک و وطن سے محبت کرتا ہے۔

मुसलमान अपने वतनी भाइयों से महब्बत करता है

مسلمان اپنے وطنی بھائیوں سے محبت کرتا ہے۔

मुसलमान अपने मुल्क के क़वानीन की पास्दारी करता है

مسلمان اپنے ملک کے قوانین کی پاسداری کرتا ہے۔

मुसलमान अपने मुल्क में अम्न व अमान चाहता है

مسلمان اپنے ملک میں امن وامان چاہتا ہے۔

मुसलमान दहशत गर्दी को नाजाइज़ और हराम मानता है

مسلمان دہشت گردی کو ناجائز اور حرام مانتا ہے۔

मुसलमान ग़रीबों और बे सहारा यतीमों और बेवाओं की मदद करता है

مسلمان غریبوں اور بے سہارا یتیموں اور بیواؤں کی مدد کرتا ہے۔

मुसलमान खुद इल्म व हुनर सीखता और दूसरों को सिखाता है

مسلمان خود علم و ہنر سیکھتا اور دوسروں کو سکھاتا ہے۔